'इतिहास ग्रंथ' जो अब तक
ना कहा गया ना लिखा गया

वी.पी.सिंह
चंद्रशेखर
सोनिया गाँधी
और
मैं

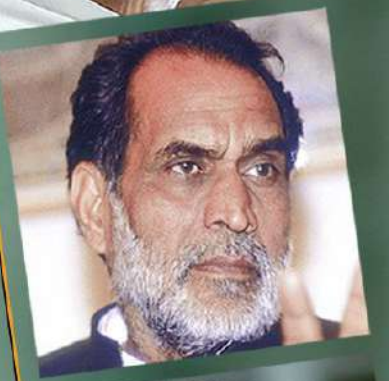

संतोष भारतीय

वी.पी.सिंह, चंद्रशेखर सोनिया गाँधी और मैं

संतोष भारतीय

Warrior's VICTORY PUBLISHING HOUSE

संपादकीय

वो कुछ दीवाने थे
जो चुनौतियों की बारिश के बीच
इतिहास रच रहे थे
और मैं,
क़तरों को जोड़कर
मोती समेट कर
इतिहास गूँथ रहा था

एक व्यक्ति जब देश की महत्वपूर्ण निर्णायक घटनाओं का हिस्सा बन जाए तो वह असाधारण, अनमोल और विलक्षण हो जाता है। संतोष भारतीय एक ऐसे शख़्स का नाम है, जिसने भारत की राजनीति के चढ़ते, उतरते, बदलते तेवर देखे हैं और राजनेताओं की महत्वाकांक्षाओं की बनती, उछलती, बिखरती, टूटती लहरें भी देखी हैं। संतोष जी के लिए 'संतोष भारतीय' होना इतना आसान नहीं था,उन्होंने अपने जीवन के अलावा कई एतिहासिक लोगों के जीवन को जिया है और वह भारत के महान राजनेताओं के सहयात्री इस तरह रहे कि आज वह ख़ुद उस कालखंड का आइना बन गए हैं। वे एक जीता जागता encyclopedia हैं जो उस वक़्त की गाथा जब कहते-लिखते हैं तो शब्द-शब्द सच्चा और प्रामाणिक लगता है। *वी.पी.सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं,* एक साधारण किताब नहीं है यह भारत के उस बदलते समय का 'इतिहास ग्रंथ' है जो अब तक ना कहा गया ना लिखा गया।

संतोष जी के हाथ से लिखी एक हज़ार पन्नो की manuscript मेरे सामने थी। उन्होंने यह एक हज़ार पन्ने तीन महीनों में धारा प्रवाह लिख डाले थे। ख़ास बात यह है कि पन्नो पर कोई शब्द कटा हुआ नहीं था, ना कोई वाक्य दोबारा लिखा हुआ। जैसे इलहाम हुआ हो किसी को और वो लिखता चला जाए। मगर ये इलहाम नहीं था बल्कि जुनून था, प्रेम था, सच्चाई थी, संवेदनशीलता थी, क़द्र थी, फ़िक्र थी उस समय के हर उस व्यक्ति के प्रति, जो भारत को महा देश बनाने में सहभागी था। जैसे-जैसे इस किताब पर काम होता गया वैसे-वैसे उस दौर के हिन्दुस्तान के उन महानायकों से मेरी मुलाक़ात होती चली गई। इस किताब को संतोष जी ने पटकथा की तरह लिखा है। पढ़ने वाला उस काल में यात्रा करने लगता है और उसकी नज़र के सामने दृश्य चलने लगते हैं।

इस किताब का संपादन, इसकी संरचना और आप तक पहुँचाना बहुत ही दिलचस्प और चुनौतियों से भरा सफ़र था। मैं ही नहीं टीम का हर व्यक्ति इस किताब में लिखे 'वक़्त' को जी रहा था। किताब का काम ख़त्म हुआ तो लगा कि ज़िंदगी में कुछ कमी सी हो गई हो। हम सब लोग अपने आस-पास वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर और सोनिया गाँधी की कमी महसूस कर रहे थे। यह संतोष जी की क़लम की ताक़त है कि हम सब लोग किताब के हर किरदार के साथ ख़ुद को देखने लगे और हम भी उन सबके साथ उनके एतिहासिक सफ़र का हिस्सा हो गए।

इस किताब की ख़ास बात यह है कि इसका हर एक पन्ना, 'एक कहानी' कहता है। जिस पन्ने को पलट कर देखिए उस पर एक ऐसी घटना दर्ज है जो पढ़ने वाले को बाँध लेती है। पढ़ने वाला यह किताब पूरी पढ़े बिना छोड़ नहीं पाता है। यह भारत के राजनैतिक इतिहास का ऐसा दस्तावेज़ है जिसे हर हिन्दुस्तानी को पढ़ना चाहिए और समझना चाहिए। उस एक 'वक़्त के टुकड़े' में भारत किस तरह विकसित हुआ, कैसे लम्हा-लम्हा आगे बढ़ा, क्या फ़ैसले लिए गए, वो कैसे हालात थे और वो कौन लोग थे जिन्होंने भारत की तस्वीर बदल देने वाले निर्णय लिए। संतोष भारतीय अगर यह किताब ना लिखते तो भारत के इस राजनैतिक इतिहास के हिस्से के साथ अन्याय होता।

इस किताब को पढ़ने के बाद सिर्फ़ राजनीति के इन महारथियों के जीवन-विस्तार का ही पता नहीं चलता बल्कि संतोष जी के 'larger than life' व्यक्तित्व का भी पता मिलता है। इस किताब को पढ़कर यह भी मालूम होता है कि देश के लिए नि :स्वार्थ प्रेम, आम आदमी के प्रति आदर और एहमियत, ख़ुद को पीछे रखकर अच्छे और क़ाबिल लोगों को राजनीति में लाना, आश्चर्यचकित करने वाले त्याग संतोष जी के व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। प्रभावशाली राजनितज्ञों को एकजुट कर उन्हें तैयार करना कि वे अपना अहम और व्यक्तिगत राजनैतिक स्वार्थ को एक तरफ़ रखकर देश के हित में काम करें, ऐसे असम्भव कार्यों को सम्भव करने के काम संतोष जी ने अपनी ईमानदारी, बुद्धि और कमाए हुए विश्वास से किए होंगे।

संतोष भारतीय पत्रकारिता की दुनियाँ के शिखर व्यक्तित्व हैं। राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विश्लेषण के विधा-गुरु हैं, एक बेहतरीन इंसान हैं, एक ज़िम्मेदार भारत के नागरिक हैं और इसीलिए वे इतनी जटिल, चुनौतीपूर्ण और कूटनीति से भरी ऐतिहासिक घटनाओं को इस किताब में इतनी सरलता से कह गए। आप इस किताब को पढ़कर कहेंगे कि आप एक 'वक़्त' से गुज़र कर आए हैं।

प्रो॰ फ़ौज़िया अर्शी

अध्याय

1	भविष्य के दो प्रधानमंत्रियों की अंतरंग मुलाक़ात	01
2	विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफ़े की अंतर्कथा	07
3	हत्याकांड, जो निर्णायक बन गए	23
4	वी.पी. सिंह ने ख़ुद लिखा	27
5	वी.पी. सिंह के इस्तीफ़े के बाद	36
6	वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर की ऐतिहासिक मुलाक़ात	45
7	धीरूभाई अंबानी	52
8	अमिताभ बच्चन	56
9	रेखा	62
10	बोफ़ोर्स	68
11	22 मई, राजीव गाँधी और वी.पी. सिंह के लिए निर्णायक दिन था	76
12	22 मई से पहले भी घटी थीं महत्वपूर्ण घटनाएँ	84
13	22 मई के बाद का रास्ता	91
14	जनमोर्चा	114
15	इलाहाबाद उपचुनाव	147
16	संसद से त्यागपत्र	158
17	चंद्रशेखर ने दावा पेश कर दिया	174
18	जनता दल सरकार की परेशानियों का सिलसिला	183
19	जितनी बड़ी समस्याएँ उतनी ज़्यादा अपेक्षाएँ	193
20	राम जन्मभूमि	200

अध्याय

21	अव्यवस्थित सरकार अव्यवस्थित दल	217
22	ऐतिहासिक गठबंधन	224
23	अंतर्द्वंदों से भरी लोकसभा	229
24	मृत्युपत्र पर हस्ताक्षर	236
25	निराशा का नया दौर	252
26	उन दिनों कांग्रेस का हाल क्या था	273
27	आमरण अनशन, किसान मंच और डायलिसिस	280
28	अब मुझे आज़ाद कर दीजिए	293
29	चंद्रशेखर	302
30	मोरारजी देसाई	345
31	23 जून को आने वाला समय बदल जाएगा	403
32	चंद्रशेखर हार गए	415
33	रामकृष्ण हेगड़े	426
34	कश्मीर आपको दिया	438
35	चंद्रशेखर का मंत्रिमंडल इतिहास का अजूबा था	442
36	यहाँ, संयोग कैसे बनते हैं	448
37	सोनिया गाँधी	457

1

भविष्य के दो प्रधानमंत्रियों की अंतरंग मुलाक़ात

मारुति ओमनी कार दिल्ली से हरियाणा की तरफ़ तेज़ी से भागी जा रही थी। कार में सिर्फ़ तीन व्यक्ति थे, ड्राइवर के पास वाली अगली सीट पर विश्वनाथ प्रताप सिंह बैठे थे, जिन्होंने अप्रैल में देश के रक्षा मंत्री के पद से त्यागपत्र दिया था। पिछली सीट पर सूरज थे जो मेरे साथ पिछले दस वर्षों से साए की तरह रहते थे और *ओमनी कार* मैं चला रहा था। हम हरियाणा स्थित भोंडसी गाँव जा रहे थे जहाँ चंद्रशेखर जी थे, जिन्हें उनकी भारत यात्रा की समाप्ति के बाद गाँव

वालों ने भारत यात्रा केन्द्र बनाने के लिए ज़मीन दी थी। चंद्रशेखर जी रात को दिल्ली में रहते थे और दिन में भोंडसी आ जाते थे। यहाँ उनकी योजना एक बड़ा आश्रमनुमा केंद्र बनाने की थी, जिसमें देश के नौजवानों को देश के लायक़ बनाने की तैयारी करवानी थी। दरअसल उस *ओमनी कार* की यात्रा के पीछे कुछ दिन पहले घटी एक घटना थी, जिसकी वजह से विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर जी से मिलने भोंडसी गाँव जा रहे थे।

"एक ऐसा फ़ैसला होने वाला था, जो तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के पूरे राजनीतिक जीवन को बदल देने वाला था"

लेकिन इससे पहले वह घटना, जानना ज़रूरी है जो आगे घटने वाली घटनाओं का पहला अक्षर बनने वाली थी।

1987 के अप्रैल का आख़िरी सप्ताह था। मैं, चंद्रशेखर जी से मिलने *साउथ ऐवेन्यू*, उनकी कुटिया में गया था। *3-साउथ ऐवेन्यू* में चंद्रशेखर जी मुख्य घर के अन्दर नहीं, बल्कि एक कुटिया जैसे कॉटेज में रहते थे। यह कुटिया बड़े-बड़े राजनीतिक फ़ैसलों की गवाह रही है। इस बार भी यह भारत के भविष्य में घटने वाली राजनीतिक घटनाओं की गवाह बनने वाली थी। एक ऐसा फ़ैसला होने वाला था जो तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के पूरे राजनीतिक जीवन को बदल देने वाला था।

चंद्रशेखर जी धोती कुर्ता पहन कर कुटिया के मिलने वाले कमरे में मुस्कुराते हुए आए। वे हमेशा धोती कुर्ता ही पहनते थे। आते ही पूछा, "*डोसा खाओगे?*" मैंने मना किया, तो उन्होंने चाय मँगवाई। चंद्रशेखर अपने अंतरंग मित्रों और जिन्हें वे पसन्द करते थे, उन्हें डोसा अवश्य खिलाते थे। उनकी कुटिया के पास दक्षिण भारतीय खाना देने वाला एक छोटा होटल था, वहीं से वे डोसा इडली

2

विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफ़े की अंतर्कथा

संपादक सुरेन्द्र प्रताप सिंह और उनके मित्र अक्षय उपाध्याय कलकत्ता से लखनऊ आए। हम तीनों यहाँ से बद्रीनाथ के लिए रवाना हुए। चलते वक़्त चौक की प्रसिद्ध ठंडई सुरेन्द्र जी ने मुझे कम, लेकिन अक्षय उपाध्याय को ज़्यादा पिला दी। उस ठंडई में भाँग पड़ी हुई थी। सारे रास्ते लगभग आठ घण्टे तक अक्षय उपाध्याय का साहित्य सहित तमाम विषयों पर अनवरत प्रवचन चलता रहा। दिनभर की यात्रा के बाद दिमाग़ बहुत बोझिल हो चुका था और थकान बहुत

थी। नैनीताल पहुँचते ही मैंने वहाँ के डी.आई.जी श्रीराम अरुण को फ़ोन किया, उनसे मेरा परिचय था। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री वी.पी. सिंह ने त्यागपत्र दे दिया है। हम तीनों श्रीराम अरुण के घर पहुँचे, चाय पी और जानने की कोशिश की, कि त्यागपत्र कैसे हुआ ? श्रीराम अरुण को ज़्यादा पता नहीं था। हमारा सामान कार में ही था। एस.पी. सिंह ने निर्णय लिया कि लखनऊ वापस चलेंगे। सारी रात यात्रा कर सुबह छह बजे हम लखनऊ पहुँचे और सीधे मुख्यमंत्री निवास गए। हमारे आने की ख़बर पाकर वे मिलने आए। काफ़ी बातें हुईं। मैंने उनसे आग्रह किया *'त्यागपत्र के पीछे क्या कारण थे और उन्होंने क्यों इस्तीफ़ा दिया, इसे वे स्वयं लिखकर अगर टाइप करवा दें, तो उसे रविवार में छापा जाए'*। एस.पी. सिंह इस सुझाव से बहुत ख़ुश हुए। वी.पी. सिंह लिखने के लिए मान गए।

उन दिनों हम ऐसी ख़बरें *'एयर पैकेट'* से कलकत्ता भेजते थे। सुबह सात बजे लखनऊ से कलकत्ता हवाई जहाज़ जाता था। मैं अगले दिन सुबह साढ़े पाँच बजे मुख्यमंत्री आवास पहुँच गया। वी.पी. सिंह मेरा इंतज़ार कर रहे थे। सारी रात जागकर उन्होंने अपने हाथ से बारह पेज में लिखा, *"मैंने इस्तीफ़ा क्यों दिया।"* यह मेरा पहला अनुरोध था मुख्यमंत्री से और उन्होंने उसे मान लिया। इससे पहले वे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुस्कुराते हुए कह चुके थे, *"संतोष जी, हमारे लिए सोमवार कब आएगा ?"* इस घटना से पहले हमेशा मेरा और उनका सामना सत्ता प्रतिष्ठान विरोधी रिपोर्ट के साथ होता था। मैंने कभी किसी मुख्यमंत्री के साथ खाना नहीं खाया, चाय नहीं पी, इसकी भी साख थी और स्वयं वी.पी. सिंह इसके प्रशंसक थे।

सभी हिन्दी प्रदेशों में विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश में *रविवार* की तूती बोलती थी। उन्हें बहुत सारी जानकारी ख़ासकर उनके राज्य में क्या हो रहा है *रविवार*

3

हत्याकांड, जो निर्णायक बन गए

विश्वनाथ प्रताप सिंह इस्तीफ़ा देने के लिए पहले से मन बनाए हुए थे, लेकिन दो घटनाएँ ऐसी घटीं, जिनके बाद वे अपने निर्णय को और स्थगित नहीं रख पाए।

पहली घटना की पृष्ठभूमि इस प्रकार थी, 4 मई 1981 की सुबह सात बजे कानपुर ज़िले की डेरापुर तहसील के दस्तमपुर गाँव से बाहर दो पुलिसवालों ने दो अर्ध-शहरी लग रहे व्यक्तियों का सामान छीनना चाहा। नतीजे में उन दोनों व्यक्तियों ने पुलिसवालों की

पिटाई कर दी। पुलिसवालों को पिटते देख और इस आशंका से कि बाद में पुलिस आकर गाँव वालों को ही पीटेगी, अधेड़ उम्र का गंगाचरण यादव पुलिसवालों को बचाने दौड़ा। इन दो व्यक्तियों ने उसे भी मारा, जिससे उत्तेजित हो गंगाचरण के दो बेटे, प्यारेलाल के बेटे और शिवराम के भतीजे उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने मिलकर उन दोनों व्यक्तियों को बाँधा और वहीं पेड़ के नीचे डाल दिया। तब उनमें से एक ने कहा कि वह गुलौली का बाबा मुस्तक़ीम है। बाद में डेरापुर की पुलिस आई और उसने एक नाले के नीचे तथाकथित मुस्तक़ीम व उसके साथी को गोली से उड़ा दिया।

मुस्तक़ीम का चचेरा भाई मुस्लिम, इसी गिरोह का सदस्य था। वह अपने दूसरे साथियों के साथ मशहूर दस्यु मलखान के पास भागकर चला गया और उसके संरक्षण में दिन बिताने लगा। जब मलखान ने आत्मसमर्पण का निश्चय किया, तो मुस्लिम परेशान हो उठा, क्योंकि उसने मुस्तक़ीम की लावारिस-सी पड़ी क़ब्र पर जाकर क़सम खाई थी कि वह मुस्तक़ीम को पकड़ने वाले लोगों से बदला लेगा। वह रामपुरा तक मलखान के साथ गया, उसके बाद मलखान से स्वचालित हथियार लेकर उसने यह घोषणा की, कि बिना बदला लिए ज़िंदा रहने का उसके लिए कोई अर्थ नहीं है और पुनः बीहड़ों में भाग गया।

नौ दिनों तक लगातार पैदल चलकर छिपता हुआ मुस्लिम अपने साथियों के साथ कानपुर आया। कानपुर में उसने शादी में जाने के नाम पर एक *मेटाडोर* किराये पर ली तथा 27-28 जून की रात अकबरपुर के रास्ते से दस्तमपुर पहुँचा। *मेटाडोर* सबसे पहले ग्राम प्रधान प्यारेलाल के घर पर रुकी और वहाँ उसने अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। कुछ लोग गंगाचरण के और कुछ शिवराम के घर पर चले

4

वी.पी. सिंह ने ख़ुद लिखा

मैंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफ़ा क्यों दिया...

साधारण सी सुबह थी। चाय के प्याले के साथ अख़बारों में कुछ ऐसी ख़बर भी नहीं थी, जो आज याद हो। हाँ, पत्रकार आनंद सागर मेरे साथ मुज़फ़्फ़रनगर की यात्रा के बाद पिथौरागढ़ नहीं जा सके थे और दिल्ली में ही छूट गए थे, पता नहीं लखनऊ आ सके कि नहीं? स्टाफ़ को फ़ोन किया कि पता लगाए। मालूम हुआ, वे कल शाम ही आ गए हैं। टाइप हुई दिनचर्या देखी 28-06-82,

सोमवार, महीने का आख़िरी सोमवार था। *उद्योग बंधु* की बैठक का दिन था। दस बजे, अधिकारियों के साथ मेरी रुचि का कार्यक्रम था। नए व फ़ौरी फ़ैसलों का हौसला लिए, चलने की तैयारी करने लगा। फाटक से निकला ही था कि कुछ उत्सुक चेहरे फुटपाथ पर दिखाई पड़े, हाथों में कागज़ लिए हुए। गाड़ी रोकी। आर्थिक सहायता, नौकरी, स्थानांतरण की दरख़्वास्तें थीं। इनके दुखड़े दूर हो पाएँगे कि सचिवालय की अलमारियों में बंद हो जाएँगे ? लाल फ़ीते की मुट्ठी में सारा चीत्कार बंद हो जाता है। इंसान एक काग़ज़ बन जाता है। क़िस्मतों पर ताले पड़ जाते हैं और इनके ढूह पर खड़े होकर हम हर परेशान को सुखमय भविष्य के लिए आश्वस्त करते रहते हैं। वह मूक होता है, हम मुखर, जनता और सत्ता के बीच कोई खाई नहीं है, बस पर्दा है, एक वर्क़ काग़ज़ का, दुर्ग सा दुर्भेद्य। दुर्ग के गर्भ में, मैं पहुँच गया। सचिवालय का लिफ़्टमैन मुझे सलाम कर ऊपर ले गया। किसके ऊपर ? जब मैं ऊपर पहुँचा तो राह चलने वाला मुझसे पाँच मंज़िल नीचे था। मेरी कुर्सी बाँहें फैलाए मुझे गोद में बिठाने के लिए उत्सुक थी। उसके पास हाथ थे, पाँव थे, पीठ थी और पेट भी जिसमें मैं बैठने जा रहा था, किंतु *'सर'* नहीं। सभी कुर्सियों की तरह वह भी बे-सर थी। मैं बैठा और *'सर'* कहने वाले सामने आ गए. . . कुर्सी को सर मिल गया और मेरे सर पर भी असर हो गया।

" पन्नों की उलट-पुलट के साथ क़िस्मतें भी करवटें लेतीं पर उस उलट-फेर में क्या कभी दीनू की भी क़िस्मत मिल जाएगी ? "

उद्योग बंधु के प्रथम सत्र की मीटिंग शुरु हो गई। लाल, पीले, नीले पन्नों में प्रदेश के औद्योगीकरण के ख़्वाब संजोए हुए थे। पन्नों की उलट-पुलट के साथ क़िस्मतें भी करवटें लेतीं पर उस उलट-फेर में क्या कभी दीनू की भी क़िस्मत मिल जाएगी ? तलाश तो उसी

5

वी.पी. सिंह के इस्तीफ़े के बाद

वी.पी. सिंह कार्यवाहक मुख्यमंत्री थे। मैंने उन्हें अपने घर, *ऑफ़िसर्स होस्टल* में खाने का आमंत्रण दिया। वे आए, उनके साथ एक भी सुरक्षाकर्मी नहीं था। स्वयं खुली जीप चलाते हुए आए। मैंने अपने दो मित्रों राजेश शर्मा और प्रसिद्ध कवि मंगलेश डबराल को भी बुला लिया था। 8 बजे से रात 11 बजे तक कविताओं का अद्‌भुत दौर चला। राजेश शर्मा जी और मंगलेश जी ने अपनी कविताएँ सुनाईं और तभी मुझे पहली बार वी.पी. सिंह से कविताएँ सुनने का अवसर मिला।

वी.पी. सिंह बहुत डरे हुए थे कि इंदिरा जी जब उन्हें मिलेंगी तो बहुत नाराज़ होंगी क्योंकि उन्होंने इस्तीफ़ा देने से पहले उनसे पूछा नहीं था। इंदिरा जी नैनीताल गईं, हवाई जहाज़ से पंत नगर उतरीं, वहाँ से कार से नैनीताल चलीं। कार्यवाहक मुख्यमंत्री के नाते वी.पी. सिंह उनके साथ कार में थे। इंदिरा जी अगली सीट पर थीं और वी.पी. सिंह पीछे थे। सारे रास्ते इंदिरा जी मुस्कुराते हुए पहाड़, हवा, बादल, पेड़ों और चिड़ियों की बातें करती रहीं। राजनीति पर रास्ते भर एक बार भी बात नहीं की। जब वे वापस जाने लगीं तो अकेले में वी.पी. सिंह से पूछा कि तिवारी जी कैसे रहेंगे? *(तिवारी जी से मतलब नारायण दत्त तिवारी)* बस!

“वी.पी. सिंह के पैर में मोच आ गई और वे बिस्तर में सिमट गए, तब उन्होंने पेंटिंग बनाने की शुरुआत कर दी”

मैंने सारी रिपोर्ट *रविवार* में लिख दी। वी.पी. सिंह का फ़ोन आया और उन्होंने मुझसे सवाल किया, *“किसने आपको ये सारी बात बताई।”* मैंने कहा, *“मैं नहीं बताऊँगा, अगर ग़लत है तो आप खंडन कर दीजिए।”* वे बोले, *“है तो सही।”* दरअसल जिस *मर्सिडीज़* से इंदिरा जी और वी.पी. सिंह नैनीताल गए थे उसके ड्राइवर ने मुझे ये सारी बातें बताई थीं। ये घटनाएँ ही भविष्य में वी.पी. सिंह और मेरे अंतरंग रिश्तों की बुनियाद बनीं। *प्रोफ़ेशनल* दुश्मनी अंतरंग विश्वास के रिश्तों में बदलने लगी थी।

“वी.पी. सिंह बहुत डरे हुए थे कि इंदिरा जी जब उन्हें मिलेंगी तो बहुत नाराज़ होंगी”

वी.पी. सिंह के पैर में मोच आ गई। वे बिस्तर में सिमट गए, तब उन्होंने पेंटिंग बनाने की शुरुआत कर दी। मैंने उन्हें सलाह दी कि ठीक होने के बाद क्यों न वे कुछ जगहों पर जाकर लोगों से मिलें। वे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ ज़िलों में गए। विधायक

6

वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर की ऐतिहासिक मुलाक़ात

शायद इसीलिए चंद्रशेखर ने मुझे कहा था कि क्या मैं, वी.पी. सिंह को लेकर उनके पास भोंडसी आ सकता हूँ? वी.पी. सिंह मेरे साथ भोंडसी चलने के लिए तैयार हो गए। जब हम भोंडसी गए और *मारुति वैन* से उतरे तो मैंने देखा कि चंद्रशेखर जी दूर खेतों की तरफ़ थे। वे वहाँ से लगभग दौड़ते हुए आए। मेरे लिए यह दृश्य अद्‌भुत था। चंद्रशेखर, जयप्रकाश जी के बहुत नज़दीक थे। वे *जनता पार्टी* के अध्यक्ष रह चुके थे। कन्याकुमारी से पैदल चलकर दिल्ली आए

थे। देश के प्रसिद्ध *युवातुर्क* थे। उन्होंने इंदिरा गाँधी का साथ भी दिया था और उनका विरोध भी किया था। *जनता पार्टी* के अध्यक्ष के नाते उन्होंने मोरारजी भाई का भी कई बार सामना किया था। वे जिस अपनेपन के साथ तेज़ी से चलते हुए वी.पी. सिंह के पास आए उसने भविष्य की राजनीति का पहला अध्याय लिखने की नींव डाल दी थी।

उस समय भोंडसी में सिर्फ़ कच्ची कोठरी सी थी। उसी में दोनों व्यक्ति लगभग दो घंटे बैठे। दोनों ने मुझे साथ बैठने को कहा, लेकिन मैंने दोनों से विनम्रता से कहा, *"आज तो आप अकेले बैठ कर जो बात करना चाहें कर लें।"* दोनों ने दो घंटे बाद बाहर आकर एक-दूसरे को गंभीर मुस्कान के साथ नमस्कार किया। चंद्रशेखर वहीं रुक गए और वी.पी. सिंह उसी *मारुति वैन* में आकर बैठ गए जिसमें वे आए थे। मैं गाड़ी चला कर उन्हें वापस दिल्ली ले आया। घर पहुँच कर उन्होंने कहा,*"चंद्रशेखर जी से बहुत अच्छी बात हुई और उन्होंने महत्वपूर्ण सलाह दी है।"* उन्होंने मुझे यह भी कहा, *"कोई भी फ़ैसला लेने से पहले वे हमेशा चंद्रशेखर जी से सलाह-मशवरा अवश्य करेंगे।"* अगले दिन चंद्रशेखर ने मुझे बुलाया और कहा, *"विश्वनाथ के मन में अभी भी कांग्रेस के प्रति मोह है।"* फिर वे मेरी तरफ़ गंभीरता से देखते हुए बोले,*"मैंने उनसे कहा है कि उनका मोह बहुत जल्द ही टूटेगा, इंदिरा जी और राजीव गाँधी में बहुत फ़र्क़ है, दोनों की सोच और दोनों का देश के बारे में नज़रिया अलग है।"*

"वे जिस अपनेपन के साथ तेज़ी से चलते हुए वी.पी. सिंह के पास आए उसने भविष्य की राजनीति का पहला अध्याय लिखने की नींव डाल दी थी"

7

धीरूभाई अंबानी

वी.पी. सिंह की वित्तमंत्री के पद से उल्टी गिनती शुरू हो गई, जिसमें दो घटनाओं का बड़ा योगदान रहा। पहला धीरूभाई से जुड़ा है। भूरेलाल जी के नेतृत्व में डी.आर.आई ने तय किया कि धीरूभाई के यहाँ छापा डालना है। दिल्ली से दो सौ से ज़्यादा की टीम तैयार हुई और *पालम* हवाई अड्डे पहुँच गई। इसे रात साढ़े बारह पर रवाना होना था। अचानक भूरेलाल जी आए। वी.पी. सिंह उन्हें लेकर अंदर चले गए। पन्द्रह मिनट के बाद जब दोनों बाहर निकले

8

अमिताभ बच्चन

सोनिया गाँधी क्यों अमिताभ बच्चन से नाराज़ हुईं और क्यों उन्होंने राजीव गाँधी की मृत्यु के बाद अमिताभ बच्चन से मिलना स्वीकार नहीं किया ?

अमिताभ बच्चन को लेकर एक बड़ी अफ़वाह फैली थी कि उनके यहाँ छापा पड़ा है और उनके भाई अजिताभ के ऊपर वित्त मंत्रालय की कड़ी नज़र है। मैं इस अफ़वाह की जड़ तक जाना चाहता था। जब वी.पी. सिंह ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया तब मैंने

उनसे जानने की कोशिश की। वी.पी. सिंह ने जवाब में एक कहानी सुनाई। *"गुलाब का एक बग़ीचा था। मैं वहाँ टहलने गया और एक पौधे के पास देर तक रुक गया। उस पौधे में खिला गुलाब बहुत आकर्षक था। दूर खड़ा एक व्यक्ति चिंतित हो गया क्योंकि उसने उसी गुलाब के पौधे के नीचे कुछ जवाहरात गाड़ रखे थे। उसने सोचा मुझे पता चल गया है तो उसने उसी शक में मेरे ऊपर हमला कर दिया।"* कहानी साफ़-साफ़ मामला बता रही थी। अमिताभ बच्चन, राजीव गाँधी के बहुत क़रीबी थे। जब भी कोई विदेशी राष्ट्रपति आता था तो राजीव गाँधी, अमिताभ बच्चन को अवश्य बुलाते थे और उनका परिचय सांसद के नाते कम, अभिनेता के नाते ज़्यादा करवाते थे।

जब भी कोई महत्वपूर्ण अतिथि आता था, जैसे रूस के राष्ट्रपति, तो राजीव गाँधी, अमिताभ बच्चन से कहते थे कि *"मेरे अंगने मे तुम्हारा क्या काम है गाने पर डाँस करके दिखाओ।"* अमिताभ बच्चन को जैसा भी लगता रहा हो पर उन्हें यह करना पड़ता था। अमिताभ बच्चन और राजीव गाँधी की दोस्ती में बहुत जल्दी दरार आ गई। इसके पीछे की कहानी भी काफ़ी महत्वपूर्ण है।

"राजीव गाँधी, अमिताभ बच्चन को अवश्य बुलाते थे और उनका परिचय सांसद के नाते कम, अभिनेता के नाते ज़्यादा करवाते थे"

वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री बन गए और राजीव गाँधी भूतपूर्व प्रधानमंत्री हो गए। वे 10-जनपथ में रहने आ गए थे। एक दिन अमिताभ बच्चन, राजीव गाँधी से मिलने आए। दस मिनट के बाद जब वे चले गए तो राजीव गाँधी ने कहा, *"ही इज़ अ स्नेक"* अर्थात *'यह साँप है।'* जब राजीव गाँधी ने यह कहा तो वहाँ एक पत्रकार

9

रेखा

उन दिनों मैं दिल्ली में *रविवार* का विशेष संवाददाता था। अभिनेत्री रेखा देश के सिनेमा जगत की निर्विवाद सबसे बड़ी अभिनेत्री थीं। एस.पी. सिंह ने जो *रविवार* के संपादक थे, उन्होंने एक चुनौती भरा काम सौंपा। बम्बई जाकर मुझे रेखा का इंटरव्यू लेना था। मेरे पास कोई सूत्र नहीं था। अचानक पता चला कि लच्छू महाराज के छोटे भाई मुन्नू एक फ़िल्म बना रहे हैं, *'ज़मीन आसमान'*। उसमें शशि कपूर और रेखा की जोड़ी है। मैंने मुन्नू

(उदय नारायण सिंह) से कहा कि मुझे रेखा जी का इंटरव्यू करना है। मुन्नू ने रेखा जी से बात की और अगले दिन हाँ या ना बताने की बात कही। रेखा ने पता किया होगा कि *रविवार* कैसी पत्रिका है। *रविवार* उन दिनों अपनी शोहरत की पराकाष्ठा पर थी। अगले दिन रेखा ने कहा कि यह तो राजनीतिक मैगज़ीन है, मैं बात नहीं करुँगी। इसके बाद भी मैं सेट पर जाता था। दो दिनों बाद रेखा ने मुझे बुलाया और कहा, "*आप क्यों ज़िद कर रहे हैं?*" मैंने उन्हें समझाया कि *रविवार* क्या है और क्यों हम उनका इंटरव्यू करना चाहते हैं। अब तक *रविवार* ने ज़्यादा फ़िल्मों से जुड़े लोगों को अपना कवर नहीं दिया था। राज बब्बर को दो बार कवर पर आने का मौक़ा मिला था। वे उदयन शर्मा के दोस्त थे और आगरा के ही रहने वाले थे।

"रेखा और अमिताभ बच्चन की दूरी बढ़ने लगी थी। अमिताभ बच्चन फ़िल्म इंडस्ट्री का बड़ा नाम बन चुके थे"

रेखा और अमिताभ बच्चन की दूरी बढ़ने लगी थी। अमिताभ बच्चन फ़िल्म इंडस्ट्री का बड़ा नाम बन चुके थे। रेखा की कार का कुछ लोग उन दिनों पीछा करते थे। एक बार रेखा की कार पर कुछ लोगों ने पत्थर भी फेंके थे। कई लोगों का अंदाज़ा था कि इसके पीछे अमिताभ बच्चन का हाथ हो सकता है। शायद मुन्नू ने उन्हें समझाया होगा कि *रविवार* अगर उनके साथ है तो वे बहुत सी समस्याओं से बच सकतीं हैं। मुझे नहीं पता कि किस बात ने रेखा को प्रभावित किया पर सेट पर अक्सर मेरी उनसे बात होने लगी।

इसके बाद मेरे और रेखा के बीच एक रिश्ता बनने लगा और फिर उन्होंने मुझे इंटरव्यू दिया। उस इंटरव्यू ने देश के अधिकांश लोगों का ध्यान खींचा। क्या पत्रकार और क्या साहित्यकार सभी को वह इंटरव्यू बहुत पसंद आया। एक नई रेखा देश के सामने थीं। जिसे

10

बोफ़ोर्स

विश्वनाथ प्रताप सिंह के जीवन का स्वर्णिम अध्याय बाद में शुरू हुआ जहाँ से वे देश के नेता बने, पर उनके व्यक्तित्व में चमक वित्तमंत्री रहते आई। जो उद्योगपति उन्हें ख़रीद नहीं पाए, उन्होंने जब विश्वनाथ प्रताप सिंह के ख़िलाफ़ अभियान चलाया तो देश समझ गया कि वी.पी. सिंह ही भ्रष्टाचार मिटा सकते हैं। वे वित्तमंत्री रहते हुए काजल की कोठरी में से बेदाग़ निकल आए। उनका चमकना सचमुच अनोखी बात थी। उनसे पहले के अधिकांश

वित्तमंत्री किसी न किसी औद्योगिक घराने से नज़दीकी के कारण अपनी साख नहीं बना पाए थे।

अचानक *स्विस रेडियो* ने एक धमाका किया और कहा कि हथियारों के एक सौदे में भारत के बड़े लोगों को दलाली दी गई है। पर इस धमाके से पहले फ़्रांस स्थित भारतीय राजदूत ने वित्तमंत्री को एक गुप्त संदेश भेजा कि एच. डी. डब्ल्यू पनडुब्बी के सौदे में एक बड़ा बिचौलिया है जो निर्णय करने वाले लोगों को धन दे रहा है। वी.पी. सिंह, राजीव गाँधी के पास गए और पूछा कि क्या करना है। राजीव गाँधी ने साफ़ कहा कि हमारी नीति बिचौलियों के ज़रिए हथियार या कुछ भी ख़रीदने की नहीं है। उन्होंने अपने वित्तमंत्री से कहा कि वे इसे रोकें। वी.पी. सिंह ने राजदूत से कहा कि वे विस्तृत रिपोर्ट भेजें और फ़्रांस सरकार से कहें कि हमें बिचौलियों के ज़रिए बात नहीं करनी, इस पर राजदूत ने वी.पी. सिंह से कहा कि यह संभव नहीं है, क्योंकि उनके ऊपर के लोग सीधे आदेश दे रहे हैं। वित्तमंत्री से ऊपर केवल प्रधानमंत्री और उनका कार्यालय होता है। वी.पी. सिंह को गहरा धक्का लगा। इसके एक महीने के भीतर *स्विस रेडियो* का ख़ुलासा आया।

> "अचानक स्विस रेडियो ने एक धमाका किया और कहा कि हथियारों के एक सौदे में भारत के बड़े लोगों को दलाली दी गई है"

> "राजीव गाँधी को पता ही नहीं चला और उनके घर और दफ़्तर का बोफ़ोर्स सौदे में इस्तेमाल हो गया"

दरअसल, प्रधानमंत्री के घर में लगातार जाने वाले एक *इटैलियन* ओत्तावियो क्वात्रोची इस सारे ड्रामे के निर्देशक थे। राजीव गाँधी को पता ही नहीं चला और उनके घर और दफ़्तर का *बोफ़ोर्स* सौदे में इस्तेमाल हो गया। वी.पी. सिंह फिर प्रधानमंत्री के

11

22 मई, राजीव गाँधी और वी.पी. सिंह के लिए निर्णायक दिन था

22 मई से पहले भी कुछ घटनाएँ हुईं थीं। दरअसल अप्रैल, मई, जून, जुलाई और अगस्त बहुत हलचल भरे महीने थे जिन्होंने भारत के भविष्य की राजनीति की दिशा निर्धारित की थी। मई के पहले हफ़्ते में वी.पी. सिंह कलकत्ता गए थे। वहाँ उनका स्वागत युवक कांग्रेस के बहुत से कार्यकर्ताओं ने किया था। वे कलकत्ता प्रेस क्लब के निमंत्रण पर गए थे। कलकत्ता के लिए उन्हें *राजधानी* पकड़नी थी जो शाम पाँच बजे जाती थी। दोपहर दो बजे अरुण नेहरू

आकर वी.पी. सिंह को लेकर *ड्राइंग-रूम* में बैठ गए। किसी के भी अन्दर आने की मनाही हो गई। चार बजे घर से निकलना था वरना *राजधानी* छूट जाती। मैंने हिम्मत कर तीन पैंतालिस पर कमरे का दरवाज़ा खोला, वी.पी. सिंह ने आँख के इशारे से पूछा *"क्या है"* तो मैंने सिर हिलाकर इशारा किया, *"चलना है।"* वी.पी. सिंह तत्काल उठ खड़े हुए और *ड्राइंग-रूम* से बाहर आकर कार में बैठ गए। रास्ते में *राजधानी* के केबिन में उन्होंने बताया कि अरुण नेहरू कह रहे थे कि मैं कलकत्ता जाना स्थगित कर दूँ, क्योंकि शाम को राष्ट्रपति मुझे प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाना चाहते हैं। मैंने अरुण नेहरू को मना कर दिया। सारे रास्ते ट्रेन के मुसाफ़िर वी.पी. सिंह से मिलने आते रहे और उनसे कहते रहे कि सिर्फ़ आप हैं जो भ्रष्टाचार से लड़ सकते हैं। कलकत्ता में अशोक सेन के अलावा उनसे कोई कांग्रेस का बड़ा नेता मिलने नहीं आया पर कांग्रेस के बहुत से कार्यकर्ता मिलने आए। इतना ही नहीं राज्य के बुद्धिजीवियों में अपार उत्साह दिखा। *'रोल इन पब्लिक लाइफ़'* पर कलकत्ता के *नेताजी इंडोर स्टेडियम* में हो रहे सेमिनार में हिस्सा लेने के लिए सभी ने अपने काम जल्दी से निपटाए और *इंडोर स्टेडियम* में आकर बैठ गए। *स्टेडियम* खचाखच भर गया। वे जहाँ-जहाँ गए भीड़ उनके साथ रही। मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने उनसे पैंतालीस मिनट मुलाक़ात की और इस मुलाक़ात ने वी.पी. सिंह और ज्योति बसु के बीच ऐसा संबंध बना दिया जो ज्योति बसु के देहावसान तक चला। 1996 में वी.पी. सिंह ने जब दूसरी बार प्रधानमंत्री बनना अस्वीकार कर दिया तो दलों के नेताओं ने पूछा कि तब किसे प्रधानमंत्री बनाएँ? तब

"क्योंकि शाम को राष्ट्रपति मुझे प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाना चाहते हैं। मैंने अरुण नेहरू को मना कर दिया"

12

22 मई से पहले भी घटी थीं महत्वपूर्ण घटनाएँ

वी.पी. सिंह के त्यागपत्र से पहले कुछ और महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी थीं। उन दिनों वी.पी. सिंह वित्तमंत्री थे। 11 मार्च 1987 को सी.बी.आई के हाथ एक पत्र लग गया। यह अमेरिकी जासूसी एजेंसी *फ़ेयर फ़ैक्स* के *वाइस प्रेसिडेंट* गार्डेन मैक ने *इंडियन एक्सप्रेस* के स्तंभकार एवं आर.एस.एस के प्रमुख सलाहकार एस. गुरूमूर्ति के नाम लिखा था। इस पत्र में अमिताभ बच्चन और उनके भाई अजिताभ बच्चन की *स्विटज़रलैंड* की संपत्ति की जाँच

की बात लिखी थी। यह ख़त अमिताभ बच्चन के लिए ख़तरे की घंटी था।

6 अप्रैल को प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक भूरे लाल ने राजस्व सचिव विनोद पांडे को लिखे अपने नोट में बताया था कि उन्होंने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान वहाँ की जासूसी एजेंसी *फ़ेयर फ़ैक्स* को टैक्स चोरी और विदेशी मुद्रा में हेराफेरी करने वालों की जाँच कर उनके ख़िलाफ़ सबूत इकट्ठा करने का काम सौंपा है। इस एजेंसी का भुगतान उसके काम के आधार पर किया जाना था।

13 मार्च 1987 को *इंडियन एक्सप्रेस* ने एक और पत्र छापा जिसे राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह ने 9 मार्च 1987 को प्रधानमंत्री को लिखा था कि राजीव गाँधी, राष्ट्रपति को किसी भी मामले की ब्रीफ़िंग नहीं दे रहे हैं। यह पत्र सी.बी.आई को रामनाथ गोयनका के दिल्ली स्थित गेस्ट हाउस पर छापे के दौरान तलाशी में मिला। इसी दिन एस. गुरूमूर्ति को गिरफ़्तार कर लिया गया। कांग्रेस सांसदों ने राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह के ख़िलाफ़ महाभियोग चलाने की माँग कर दी। 31 मार्च 1987 को लोकसभा में *फ़ेयर फ़ैक्स* मामले को लेकर बहस हुई। 31 मार्च 1987 को लोकसभा में राजा दिनेश सिंह को बहस के लिए उतारा गया। उन्होंने वी.पी. सिंह पर आरोपों की झड़ी लगा दी। उनके सवाल थे कि क्या वित्तमंत्री ने *फ़ेयर फ़ैक्स* की पृष्ठभूमि का ठीक तरह से आकलन किया है? क्या *फ़ेयर फ़ैक्स* आर्थिक मामलों की जासूसी करने लायक़ है? क्या वित्तमंत्री रहते समय विश्वनाथ प्रताप सिंह ने प्रधानमंत्री राजीव गाँधी से पूछे बिना *फ़ेयर फ़ैक्स* को काम दे दिया है? उन्होंने यह भी कहा कि वे जानना चाहते हैं कि वी.पी. सिंह का प्रधानमंत्री राजीव गाँधी को

> "यह ख़त अमिताभ बच्चन के लिए ख़तरे की घंटी था"

13

22 मई के बाद का रास्ता

25 जून वी.पी. सिंह का जन्मदिन है। 1987 की 25 जून के बाद देश में कई घटनाएँ घटीं। 25 जून को वी.पी. सिंह पूरे दिन अपने घर पर रहे और लोगों की शुभकामनाएँ स्वीकार करते रहे। उसी दिन उनके घर राज बब्बर द्वारा भेजा फूलों का गुलदस्ता आया जिसे उनके भाई विनोद बब्बर लेकर आए थे। राज बब्बर फ़िल्मों में बड़ा नाम बन चुके थे। उसी दिन आरिफ़ मोहम्मद ख़ान के घर अरुण नेहरू, वी.सी. शुक्ला और वी.पी. सिंह मिले और उन्होंने तय किया कि वे

प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गाँधी को एक *चार्टर ऑफ़ डिमांड* देंगे जिसमें आर्थिक अपराधियों और रक्षा दलालों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही करना, उद्योगपति, नौकरशाह और राजनीतिज्ञों के गठजोड़ को समाप्त करने के साथ चुनाव फ़ंडिंग, लग्ज़री वस्तुओं पर उपकर लगाने की माँग की जाएगी। यह *चार्टर* 14 जुलाई को राजीव गाँधी को सौंपा गया। पर 14 जुलाई तो बाद में आई, इसके पहले वी.पी. सिंह की बम्बई में बड़ी मीटिंग हुई और बम्बई पहुँचते ही उनके लिए एक नारा लगा, *" राजा नहीं फ़क़ीर है, देश की तक़दीर है।"*

आख़िर जनता के साथ सीधा संवाद कहाँ से हो और कैसे हो, वी.पी. सिंह ने यह ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर डाल दी। मैंने तय किया इसकी शुरूआत बम्बई से होनी चाहिए। क्यों मेरे मन में ये विचार आया मैं कह नहीं सकता? सबसे पहले मैंने दीनू रणदिवे से संपर्क किया। दीनू रणदिवे महाराष्ट्र के बड़े पत्रकार थे और *महाराष्ट्र टाइम्स* से रिटायर होकर वे *चौथी दुनिया* के लिए रिपोर्टिंग कर रहे थे। मैंने दीनू रणदिवे से कहा कि वे बम्बई के सबसे बड़े मज़दूर नेता दत्ता सामंत से संपर्क करें और उन्हें वी.पी. सिंह की शिवाजी पार्क में सभा करवाने के लिए तैयार करें। दत्ता सामंत की बम्बई में तूती बोलती थी और वहाँ के मज़दूर उनको नायक की तरह पूजते थे। दीनू रणदिवे ने मेरी ओर से दत्ता सामंत से बात की। दत्ता सामंत फ़ौरन तैयार हो गए। उन्होंने मुझे मिलने बुलाया। मैं उनसे मिला। उन्होंने सिर्फ़ इतना पूछा कि वी.पी. सिंह, राजीव गाँधी के दबाव में कहीं मीटिंग में आने से आख़िरी क्षणों में मना तो नहीं कर देंगे? मैंने बिना वी.पी. सिंह से पूछे दत्ता सामंत से कह दिया कि ऐसी संभावना सोचें भी नहीं, वे आएँगे।

" राजा नहीं फ़क़ीर है, देश की तक़दीर है "

14

जनमोर्चा

2 अक्टूबर 1987 को देश में एक नया संगठन बना *जनमोर्चा*। यह संगठन वी.पी. सिंह ने अरुण नेहरू, रामधन, आरिफ़ मोहम्मद ख़ान और विद्याचरण शुक्ल के साथ मिलकर बनाया। *जनमोर्चा* बनने के पीछे के कारणों को भारतीय राजनीति की कमज़ोरियों का दस्तावेज़ माना जा सकता है। *जनमोर्चा* बनने से पहले चौधरी देवीलाल के बारे में जानना आवश्यक है।

भारतीय राजनीति के उस दौर को बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ था और उसे ध्वस्त करने में भी। देवीलाल जी हरियाणा के मुख्यमंत्री थे और देश के किसानों के सबसे बड़े पैरोकार भी थे। देवीलाल जी से वी.पी. सिंह की मुलाक़ात के पीछे एक व्यक्ति की नि:स्वार्थ कोशिशें थीं, सोमपाल शास्त्री की।

वी.पी. सिंह इस बीच विपक्षी नेताओं के तेवर देख चुके थे। उन्हें यह पता चल गया था कि हेमवतीनंदन बहुगुणा, कर्पूरी ठाकुर, चंद्रशेखर सहित तमाम लोग वी.पी. सिंह को आगे बढ़ते देखने में ज़्यादा रुचि नहीं रखते हैं बल्कि स्वयं को सबसे आगे देखना चाहते हैं। यद्यपि उन दिनों विपक्ष की राजनीति मुरझाई हुई थी। वी.पी. सिंह और राजीव गाँधी के वाद-विवाद ने सभी को नए सपने देखने का अवसर दे दिया था। हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल थे तो हरियाणा के नेता, लेकिन उनके तेवरों ने उन्हें सारे देश में चर्चित कर दिया था। वे वी.पी. सिंह को व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानते थे और न वी.पी. सिंह उन्हें। एक बार सोमपाल ने वी.पी. सिंह से विस्तार से देवीलाल के मनोविज्ञान को लेकर बातचीत की थी। देवीलाल रिश्ते में सोमपाल के मामा लगते थे। सोमपाल ने देवीलाल के परिवार के अंतर्द्वंद सहित उनकी सारी सीमाएँ वी.पी. सिंह को बताईं थीं। वी.पी. सिंह ने सुना और ख़ामोश रहे पर वी.पी. सिंह आगे बढ़ने के रास्तों के बारे में लगातार सोच रहे थे। वे अपने मन में उठ रहे सवालों को लेकर मुझसे बातचीत करते रहते थे। इसलिए नहीं, कि उन्हें मुझसे उत्तर की अपेक्षा थी बल्कि इसलिए कि इस प्रक्रिया में उन्हें आगे बढ़ने के विकल्प तलाश करने में आसानी हो जाती थी।

“भारतीय राजनीति के उस दौर को बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ था और उसे ध्वस्त करने में भी”

15

इलाहाबाद उपचुनाव

वी.पी. सिंह ने इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र में कार से घूमना शुरू किया। वे कभी गाँवों में रुक जाते, कभी कहीं रुक जाते। इलाहाबाद वाले घर में देर रात आते और अगले दिन सुबह लौट जाते, उन्होंने इस बीच सिर्फ़ एक चक्कर दिल्ली का लगाया जिसमें उनकी मुलाक़ात एक बहुत महत्वपूर्ण आदमी से हुई जिनका नाम कांशीराम था।

शायद वो 1988 के अप्रैल का तीसरा हफ़्ता था। काफ़ी गर्मी

पड़ने लगी थी। वी.पी. सिंह का इलाहाबाद से फ़ोन आया कि वे परसों दिल्ली दो दिनों के लिए आ रहे हैं। मेरे दिमाग़ में कई दिनों से चल रहा था कि कांशीराम और वी.पी. सिंह की मुलाक़ात होनी चाहिए। मैंने उनसे पूछ लिया, *"क्या मैं आपकी और कांशीराम जी की मुलाक़ात करवाने की कोशिश करूँ? पर जगह गुप्त हो।"* वी.पी. सिंह ने फ़ौरन हाँ कहा और कहा, *"आपके घर से गुप्त क्या होगा। मैं ट्रेन से सीधे आपके घर आ जाऊँगा, आप सोमपाल जी को समझा दीजिए।"* मैं फ़ौरन रैगड़पुरा गया जहाँ कांशीराम ने मिलने बुलाया था। मैंने उनसे पूछा,*"क्या कल आप साढ़े नौ के आस-पास वी.पी. सिंह जी से मिल सकते हैं? किसी को पता नहीं चलेगा।"* उन्होंने पूछा, *"कहाँ?"* मैंने कहा, *"मेरे घर, मैं सवेरे आकर आपको ले जाऊँगा।"* कांशीराम जी मुझसे बहुत स्नेह करते थे। उन्हें *चौथी दुनिया* की धार भी पसंद थी, दिशा भी, सोच भी और तेवर भी। वे अक्सर मुझे बहुजन समाज का सिद्धांत समझाते रहते थे। शायद इसीलिए उन्होंने मेरी बात मान ली।

"मैं सुबह कांशीराम जी को लेने पहुँच गया। उन्हें साथ लेकर मैं अपनी कार से घर की ओर चला"

मैं सीधे सोमपाल जी के पास गया। उन्हें मैंने सारी बात बताई, वह बहुत ख़ुश हुए। मैंने आग्रह किया,"आप *राजा साहब को अपने साथ लेकर मेरे घर 'मौसम विहार' आ जाइए, सिक्योरिटी को उनकी कार में आने दीजिए, किसी को भी अपनी कार में मत बैठाइये, किसी चौराहे पर अपनी कार मोड़ कर आगे आ जाइए, मैं, कांशीराम जी को लेकर पहुँच जाऊँगा।"* ठीक यही अगले दिन हुआ। मैं सुबह कांशीराम जी को लेने पहुँच गया। उन्हें साथ लेकर मैं अपनी कार से घर की ओर चला। कांशीराम पूछते रहे, "क्यों

16

संसद से त्यागपत्र

एक तरफ़ वी.पी. सिंह देश में घूम रहे थे, माहौल बन रहा था, लेकिन विपक्षी दलों के भीतर निर्णायक हलचल नहीं हो रही थी। एक शाम वी.पी. सिंह बोले, *"कैसे इन नेताओं को समझाएँ कि राजीव गाँधी को अगले चुनाव में हराने के लिए इनका एक होना कितना आवश्यक है।"* मैंने कहा, *"अकेले लड़िये।"* तब कहने लगे, *"उसके लिए पाँच साल और तैयारी करनी होगी।"* उनके

17

चंद्रशेखर ने दावा पेश कर दिया

मतगणना के बाद मैं दिल्ली पहुँचा तो प्रधानमंत्री कौन बनेगा इसकी बिसात बिछी थी। चंद्रशेखर ने अपना दावा पेश कर दिया था। बाक़ी सभी नेता परेशान थे कि वोट तो वी.पी. सिंह के नाम पर माँगे गए थे और यहाँ चुनाव की स्थिति आ रही थी। देवीलाल, बीजू पटनायक, जयपाल रेड्डी, हेगड़े, अजीत सिंह और अरुण नेहरू चुनाव नहीं चाहते थे। अरुण नेहरू ने एक योजना बनाई। उन्होंने पहले बीजू पटनायक को तैयार किया, फिर देवीलाल

को, उनकी योजना थी कि चंद्रशेखर से कहा जाए कि 'हम वी.पी. सिंह की जगह देवीलाल का नाम संसदीय दल के नेता के रूप में प्रस्तावित करेंगे', इस योजना का दूसरा हिस्सा वे वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर से छुपा गए कि 'जब देवीलाल का नाम चुनाव अधिकारी सर्वसम्मति से विजयी घोषित करेंगे तब फिर देवीलाल अपनी तरफ़ से वी.पी. सिंह का नाम प्रस्तावित कर देंगे।' यह बात वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर के अलावा सब को बताई गई। सबसे पहले मधु दंडवते को विश्वास में लिया गया। आरिफ़ मोहम्मद ख़ान को पता ही था। मुझे बुलाकर अरुण नेहरू ने योजना बताई और ज़िम्मेदारी सौंपी कि सभी सांसद *सेंट्रल हॉल* में रहें, यह सुनिश्चित किया जाए। श्रीकांत जेना और भवानी शंकर होता सहित उड़ीसा के सभी सांसदों को बीजू पटनायक ने निर्देश दिया। गुजरात से, प्रकाश कोको ब्रह्मभट्ट को ज़िम्मेदारी सौंपी गई।

> "अचानक चंद्रशेखर जी खड़े हुए और उन्होंने कहा कि उन्हें यह फ़ैसला स्वीकार नहीं है"

2 दिसम्बर को संसद के *सेंट्रल हॉल* में बैठक हुई जिसमें बिल्कुल यही हुआ। जैसे ही देवीलाल का नाम घोषित हुआ, ख़ामोशी छा गई लेकिन, जैसे ही देवीलाल ने वी.पी. सिंह का नाम प्रस्तावित किया हॉल तालियों से गूँज उठा। मधु दंडवते ने वी.पी. सिंह का नाम घोषित कर दिया। अचानक चंद्रशेखर खड़े हुए और उन्होंने कहा कि उन्हें यह फ़ैसला स्वीकार नहीं है, और उन्होंने कहा, "*मुझसे कहा गया था कि देवीलाल नेता चुने जाएँगे। यह धोखा है, मैं सभा से उठकर जा रहा हूँ।*" आज कहा जा सकता है

> "श्रीकांत जेना और भवानी शंकर होता सहित उड़ीसा के सभी सांसदों को बीजू पटनायक ने निर्देश दिया"

18

जनता दल सरकार की परेशानियों का सिलसिला

वी.पी. सिंह के *जनता दल* के संसदीय नेता चुने जाने के साथ ही एस.पी.जी ने उनकी सुरक्षा संभाल ली। मैं शाम को प्रधानमंत्री के घर पहुँचा तो देखा कि उनकी कार तैयार खड़ी है। वे अंदर से निकले और बोले, "*चलिए*" मैं साथ में बैठ गया। रास्ते में उन्होंने बताया, "*जामा मस्जिद चल रहे हैं, बड़े इमाम मौलाना बुख़ारी से मिलने चलना है, अभी मिल लें तो अच्छा है।*" घोषित प्रोग्राम नहीं था इसलिए वहाँ भीड़ नहीं थी। वे पंद्रह मिनट

जामा मस्जिद में रहे और उसके बाद लौट आए। इसके बाद वी.पी. सिंह मंत्रिमंडल में शामिल करने वाले सांसदों को लेकर सलाह-मशवरा करने में लगना चाहते थे। वी.पी. सिंह ने मंत्रिमंडल बनाया लेकिन एक ग़लती उनसे हो गई। उन्होंने यशवंत सिन्हा को राज्यमंत्री बनाना चाहा जिसे चंद्रशेखर के कहने पर उन्होंने अस्वीकार कर दिया। अगर वे यशवंत सिन्हा और कमल मोरारका को मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री का दर्जा दे देते तो मंत्रिमंडल ज़्यादा सरलता से काम करता और चंद्रशेखर से उनका संबंध बना रहता। उन्होंने सुबोधकांत सहाय को राज्यमंत्री बनाया और अपेक्षा की, कि वे चंद्रशेखर के साथ उनका रिश्ता सामान्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण रोल निभाएँगे, पर ऐसा हो नहीं पाया। यशवंत सिन्हा और कमल मोरारका के आगे उनका व्यक्तित्व कमज़ोर रहा और वे चंद्रशेखर और वी.पी. सिंह के बीच पुल नहीं बन पाए। यशवंत सिन्हा और कमल मोरारका को मंत्री न बनाने के पीछे अरुण नेहरू की सलाह थी क्योंकि मंत्रिमंडल बनाने की प्रक्रिया शुरू होते ही अरुण नेहरू सबसे प्रमुख सलाहकार हो गए थे। वी.पी. सिंह ने अपने पुराने सूत्रों से सलाह-मशवरा करना बंद कर दिया था। एक दिन मेरे पास संदेश आया कि मुझे प्रधानमंत्री तलाश कर रहे हैं। मैं, प्रधानमंत्री कार्यालय गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि संजय सिंह की तबीयत बिगड़ रही है, उन्हें लंदन भेजना है, शाम को बम्बई चलना है। प्रधानमंत्री और मैं बम्बई अस्पताल गए जहाँ प्रधानमंत्री ने तय किया कि आज रात ही उन्हें लंदन रवाना कर दिया जाए। अस्पताल में ही पासपोर्ट ऑफ़िस खुल गया।

“यशवंत सिन्हा और कमल मोरारका को मंत्री न बनाने के पीछे अरुण नेहरू की सलाह थी”

19

जितनी बड़ी समस्याएँ उतनी ज़्यादा अपेक्षाएँ

इतिहास के फ़ैसले बहुतों को रास नहीं आते और बहुत से इसे समझ नहीं पाते, इतिहास का फ़ैसला होता भी देर से है, इसलिए अक्सर लोग भ्रम पाल लेते हैं कि घटनाओं के केंद्र बिन्दु वे ही हैं, ऐसे भ्रमों को इतिहास बड़ी क्रूरता से तोड़ता है और तब वे जो नायक बने दिखते थे, सबसे बड़े खलनायक नज़र आते हैं। हमारे देश का पिछले 70 वर्षों का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा है। जिन लोगों को कभी उस समय सत्ता और समाज की धुरी और अगुआ माना गया था, आज

उन्हें समय ने समाज के विघटन और सत्ता के अलोकतंत्रीकरण को ज़िम्मेदार ठहराया है।

मैंने उस समय "*धर्मयुग*" के लिए एक लेख लिखा, जिसमें मैंने लिखा, "*इतिहास विश्वनाथ प्रताप सिंह के बारे में क्या फ़ैसला देगा, यह तो पता नहीं, पर उसका फ़ैसला रोचक होगा इसमें कोई दो राय नहीं, क्योंकि इस बार शुरू हुई राजनीतिक प्रक्रिया हिन्दुस्तान के लोकतंत्र को बहुत ज़्यादा प्रभावित करेगी। क्योंकि 1989 में शुरू हुई लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जनता अपने को कितना जोड़ पाई और उसमें कितना सक्रिय हिस्सा ले पाई, इसका निर्धारण होना बाक़ी है, पर अंतत: इसकी ज़िम्मेदारी विश्वनाथ प्रताप सिंह पर ही थोपी जाएगी। जो समझते हैं कि यह कह कर बचा जा सकता है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रधानमंत्री बनने से पहले ही जनता लोकतंत्र के प्रति निराश हो चली थी, वे सामाजिक विकास के भौतिकशास्त्र को नहीं समझते। टुकड़ों में न समाज बँटता है और न बनता है। इसलिए विश्वनाथ प्रताप सिंह पर उन सबका बोझ आ गया था जो उनसे पहले उसे उठाने में असमर्थ और नाक़ाबिल साबित हो चुके थे।*"

आशाओं का पालना ख़तरनाक होता है, पर उस बार की तो आशाएँ ही ख़तरनाक थीं। समाज के सभी वर्ग एक न एक उम्मीद पाले बैठे थे। किसान, मज़दूर, बेरोज़गार, ग़रीब, उद्योगपति, अध्यापक, विद्यार्थी और न्याय व्यवस्था से पीड़ित सभी चाहते थे कि बदलाव आए। जो आतंकवाद से पीड़ित थे वे उससे मुक्ति चाहते थे और जो आतंकवाद के ज़रिए समस्या का हल समझ रहे थे, वे अपनी सफ़लता चाहते थे। इस स्थिति का चरम पहलू यह था कि हिन्दू, राम जन्मभूमि और मुसलमान, बाबरी मस्जिद हासिल करना चाहते

20

राम जन्मभूमि

2 दिसम्बर 1989 को वी.पी. सिंह की सरकार बनी थी जो अब तक की राजनीति का सबसे आश्चर्यजनक अध्याय था। इसलिए क्योंकि दक्षिणपंथ यानी भाजपा और वामपंथ यानी सी.पी.एम दोनों के सहयोग से वह बनी थी। इसलिए यह तो संभव था ही नहीं कि उसे चलने के लिए राजपथ मिले, मिलनी तो उसे टूटी-फूटी, ऊबड़-खाबड़ पथरीली सड़क ही थी, जहाँ क़दम-क़दम पर अवरोध थे। पहला अवरोध दो महीने बाद यानी फ़रवरी में ही आ गया।

राजनीति की गलियाँ क्या अंधी होती हैं ? उनसे निकलने का रास्ता कहीं है भी या नहीं ? ऐसे सवालों के जवाब नहीं मिले थे और विडम्बना यह थी कि ऐसे सवालों के जवाब तलाश करने वाले धीरे-धीरे कम होते जा रहे थे। सवाल अभी गलियों के जंगल में भटकते-भटकते इतनी दूर चले गए थे कि उत्तर उन्हें तलाश भी नहीं कर पा रहे थे। ऐसा ही सवाल राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का था जिसे बड़े प्यार से उन ताक़तों ने जो अब तक देश पर राज कर रहीं थी राजनीति की अंधी गलियों में धकेल दिया था। उस समय भी ये ताक़तें चाहती थीं कि राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का सवाल ज़िंदा रहे और उत्तर से दूर हटता चला जाए क्योंकि इसका ज़िंदा रहना उन्हें अपने राजनीतिक स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी लगता था।

उस समय जो लोग सत्ता में थे उन्होंने पूरे चार साल तक हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच नफ़रत की दीवार खड़ी करने में अपनी सारी कुशलता लगा दी थी। उन्होंने हिन्दुओं को अलग भड़काया और जब दंगे हुए तो उन्हें हवा दी। इन ताक़तों के लिए सत्ता पर बने रहने का सबसे आसान नुस्ख़ा हिन्दू-मुसलमानों के बीच नफ़रत का बढ़ाना था। पिछले दसियों सालों का इतिहास तो यही बताता है।

उस समय कई प्रांत दंगों के कारण सुर्ख़ियों में आए, उनमें मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश प्रमुख थे। इन सभी राज्यों में कांग्रेस (आई) का शासन था। जिन राज्यों में कांग्रेस (आई) का शासन नहीं था जैसे बंगाल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, असम, हरियाणा और उड़ीसा में दंगे नहीं हुए थे। सवाल उठना चाहिए था कि ऐसा क्यों हुआ ? मुझे यह भी याद नहीं आता जो यह बताता हो कि सांप्रदायिक दंगों में पकड़े गए किसी व्यक्ति को सज़ा

21

अव्यवस्थित सरकार अव्यवस्थित दल

वी.पी. सिंह अक्सर कुछ फ़ैसले बदल दिया करते थे। मेरे पास एक जानकारी आई और मुझे लगा कि प्रधानमंत्री को बताना चाहिए। जानकारी यह थी कि एक मंत्री ने 15% कमीशन की माँग की थी और माँग प्रधानमंत्री के नाम पर हुई थी। उन दिनों भारत सरकार कोशिश करती थी कि *बार्टर* के सिद्धांत पर विदेशों से सामान मँगवाया जाए। मेरे पास एक *कॉर्पोरेशन* के चेयरमैन आए और उन्होंने मुझसे कहा, *"किसी भी विदेशी सौदे में 10%*

ईमानदारी का कमीशन होता है जो मंत्री के पास जाता है, परेशानी तब होती है जब इससे ज़्यादा की माँग होती है। इस बार प्रधानमंत्री के नाम पर 5% ज़्यादा माँगा जा रहा है।" मैंने प्रधानमंत्री को बताया तो उन्होंने चेयरमैन का नाम पूछा, मैंने बता दिया। उन्होंने फ़ौरन *रैक्स* उठाया और कैबिनेट सेक्रेटरी से कहा, *"इस अफ़सर के ख़िलाफ़ सी.बी.आई जाँच बैठाइए, यह अफ़वाह फैला रहा है।"* मैं चौंक गया और बुरा भी लगा।

मैंने फ़ौरन प्रतिवाद किया, *"आप करवाइए सी. बी. आई जाँच लेकिन इसके बाद कोई भी भ्रष्टाचार की जानकारी नहीं देगा।"* कहकर मैं उठ गया। 45 मिनट बाद मेरे पास वी.पी. सिंह का बुलावा आया। मुझसे बोले, *"मैं कैबिनेट सेक्रेटरी से फ़ौरन मिलूँ।"* मैं कैबिनेट सेक्रेटरी के पास गया। वे मुस्कुरा रहे थे, पूछा, *"क्या बात है?"* मैंने सारी घटना बता दी पर, मैंने उनसे कहा, *"आपने तो सी.बी.आई जाँच का आदेश दे दिया होगा?"* वे बोले, *"नहीं दिया, मैं एक घंटे इंतज़ार करता हूँ क्योंकि मुझे मालूम है कि वे फ़ैसले बदल देते हैं। ठीक 40 मिनट बाद पी.एम का फिर रैक्स पर फ़ोन आया और उन्होंने कहा, जैसा संतोष कहें वैसा कीजिए।"* मुझसे विनोद पांडे हँसते हुए कहने लगे, *"मंत्री का नाम सही है, लेकिन अभी कुछ कर नहीं सकते।"*

> **"यह तीन दिनों से चल रहा था। अचानक ख़बर फैली कि यह हस्ताक्षर अभियान संतोष भारतीय के इशारे पर हो रहा है"**

लोकसभा में एक हस्ताक्षर अभियान चला, वो हस्ताक्षर अभियान गृहमंत्री मुफ़्ती मोहम्मद सईद के ख़िलाफ़ था। लगभग 80 सांसदों ने हस्ताक्षर कर दिए थे। यह तीन दिनों से चल रहा था। अचानक ख़बर फैली कि यह हस्ताक्षर अभियान संतोष भारतीय के

22

ऐतिहासिक गठबंधन

> "भाजपा और वामपंथी दलों को एक साथ लाने का इतिहास में पहला करिश्मा वी.पी. सिंह ने कर दिखाया था"

28 नवम्बर 1989, को भाजपा और वामपंथी दलों ने साफ़ कर दिया कि वे ग़ैर कांग्रेसी सरकार को अपना समर्थन देंगे, क्योंकि ग़ैर कांग्रेसी सरकार तभी बन सकती थी जब वामपंथी पार्टियाँ, *जनता दल* और भाजपा एक साथ आतीं। भाजपा और वामपंथी दलों को एक साथ लाने का इतिहास में पहला करिश्मा वी.पी. सिंह ने कर दिखाया था।

29 नवम्बर को राजीव गाँधी कांग्रेस संसदीय दल के नेता चुने गए और उसी दिन उन्होंने प्रधानमंत्री पद से अपना इस्तीफ़ा राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण को सौंप दिया।

28 नवम्बर को 3 बजे शाम जनता संसदीय दल की बैठक बुलाई गई थी जिसे अंतिम क्षणों में 30 नवम्बर तक के लिए स्थगित कर दिया गया। अंत में यह बैठक, 1 दिसम्बर को हुई। जिसमें वी.पी. सिंह को नेता चुना गया। 1 दिसम्बर को राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण ने वी.पी. सिंह को सरकार बनाने का न्योता दिया। 2 दिसम्बर को वी.पी. सिंह ने प्रधानमंत्री-पद की शपथ ली। देवीलाल उप-प्रधानमंत्री बनें। 5 दिसम्बर को वी.पी. सिंह मंत्रिमंडल ने शपथ ली। उस मंत्रिमंडल में *जनमोर्चा* का प्रतिनिधित्व सबसे अधिक था। वी.पी. सिंह ने अपने पास रक्षा मंत्रालय रखा था। अरुण नेहरू के पास वाणिज्य और पर्यटन मंत्रालय आया। आरिफ़ मोहम्मद ख़ान को नागरिक उड्डयन और ऊर्जा मंत्रालय मिला तथा मुफ़्ती मोहम्मद सईद आज़ाद भारत के इतिहास में पहले मुसलमान गृहमंत्री बने। गृहमंत्री के रूप में शपथ लेने के कुछ दिनों बाद ही 8 दिसम्बर को उनकी छोटी बेटी रुबइया सईद को, जो श्रीनगर में मेडिकल स्टूडेंट थी, अगवा कर लिया गया। यह अपहरण जे. के. एल. एफ़ ने किया था ताकि वे कश्मीर की जेलों में बंद अपने पाँच साथियों को रिहा करवा सकें। इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज एम.एल. बट्ट की मध्यस्थता के बाद 13 दिसम्बर को इस घटना का पटाक्षेप हुआ और फ़ारूक़ अब्दुल्लाह की नेशनल कांफ्रेंस की सरकार ने थोड़ी आनाकानी के बाद पाँचों मिलिटेंटों को रिहा कर दिया। रुबइया भी कुछ घंटों बाद अपने घर वापस आ गई। लेकिन

‘मुफ़्ती मोहम्मद सईद आज़ाद भारत के इतिहास में पहले मुसलमान गृहमंत्री बने’

23

अंतर्द्वंदों से भरी लोकसभा

नौवीं लोकसभा का एक सांसद मैं भी था। मैंने कई लेख सरकारों के काम करने के तरीक़ों पर लिखे हैं पर वे एक पत्रकार के क़लम से होते थे, लेकिन इस लोकसभा का मैं साक्षात गवाह रहा हूँ लिहाज़ा मेरा अनुभव अलग तरह का अनुभव रहा। यह लोकसभा इस मायने में बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इस लोकसभा में वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, लालकृष्ण आडवाणी, सोमनाथ चटर्जी और

राजीव गाँधी जैसे महानुभवी थे और दुर्भाग्य से राजीव गाँधी के जीवन की यह अंतिम लोकसभा थी।

नौवीं लोकसभा में कांग्रेस की कमान संभालने वाले दो जनरल थे। इनमें पहले हैं दिनेश सिंह, दूसरे हैं संतोष मोहन देव। दिनेश सिंह अपनी सौम्य भाषा में लेकिन चुटीली शैली में अक्सर *जनता दल* के नेता पर प्रहार करते थे और लोग उन्हें ध्यान से सुनते भी थे, पर संयोग से इसका परिणाम कुछ और निकलता था। प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा दिए गए उत्तर अक्सर लोगों को सोचने पर विवश कर देते थे। लोगों को पता नहीं क्यों लगने लगा कि दिनेश सिंह, विश्वनाथ प्रताप सिंह को हमला करने के लिए सुनिश्चित सुराग़ देकर, राजीव गाँधी से कहीं अपना कोई पुराना बदला तो नहीं चुका रहे? संतोष मोहन देव भी सौम्य प्रकृति के हमलावर जनरल थे जो भाजपा और माकपा के सदस्यों के तर्कों से सहमत होते हुए भी मन मारकर उनका विरोध करते थे, पर इन सबको समर्थन दक्षिण के सांसदों का मिलता था, जिनका नेतृत्व पी.जे. कुरियन करते थे। उनकी बातों का तो कोई मतलब समझ में आता नहीं था, पर कुरियन का अदा से हाथ हिलाना सभी को पसंद था।

"कुरियन का अदा से हाथ हिलाना सभी को पसंद था"

"दुर्भाग्य से राजीव गाँधी के जीवन की यह अंतिम लोकसभा थी"

कांग्रेस ने बजट सत्र में आत्मघाती रणनीति अपनाई और अपने नेता की अतिबुद्धिमानी के कारण अपने उस आवरण को उतार फेंका जिसे वह चालीस साल से ओढ़े थी, अर्थात वह दलित-समर्थक एकमात्र शक्ति थी, यह आवरण था। उसने अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के कमीशन को वैधानिक

24

मृत्युपत्र पर हस्ताक्षर

अगस्त 1990 बीतते-बीतते *जनता दल* के नेताओं ने अपने मृत्युपत्र पर हस्ताक्षर करने शुरू कर दिए। 1 अगस्त को वी.पी. सिंह ने देवीलाल को अपने मंत्रिमंडल से हटा दिया। 9 अगस्त को देवीलाल ने *बोट क्लब* पर किसान रैली का आयोजन किया। उससे दो दिन पहले 7 अगस्त को वी.पी. सिंह ने संसद में घोषणा की, कि उनकी सरकार *मंडल कमीशन* की सिफ़ारिशें लागू करेगी। 13 अगस्त को *मंडल कमीशन रिपोर्ट* पर सरकारी आदेश जारी

किया गया और 15 अगस्त को लाल क़िले के अपने भाषण में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने इसकी औपचारिक घोषणा की।

मंडल के ख़िलाफ़ पूरे देश में हिंसा होने लगी। छात्रों ने आत्मदाह शुरू कर दिया। 19 सितम्बर को दिल्ली के देशबंधु कॉलेज के छात्र राजीव गोस्वामी ने आत्मदाह किया जिसकी तस्वीरें सभी बड़े अख़बारों के पहले पन्ने पर छपीं। 1 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने *मंडल कमीशन* की रिपोर्ट पर *स्टे* लगा दिया। इसके बाद मंडल विरोधी हिंसा धीरे-धीरे शांत होने लगी। इसके बाद *जनता दल* का सामाजिक समीकरण ए.जे.जी.ए.आर (अहीर, जाट, गुजर और राजपूत) ध्वस्त हो गया।

"25 सितम्बर 1990 को लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी रथ यात्रा सोमनाथ से शुरू की"

12 सितम्बर 1990 को भाजपा ने रथ यात्रा की योजना बनाई जिसे 14 से 16 सितम्बर को भोपाल में भाजपा कार्यकारिणी ने अनुमोदित कर दिया। इससे साल भर पहले 9 से 11 जून 1989 पालमपुर में राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने राम जन्मभूमि प्रस्ताव पारित किया था।

25 सितम्बर 1990 को लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी रथ यात्रा सोमनाथ से शुरू की जिसे 10,000 किलोमीटर की दूरी तय कर 30 अक्टूबर को अयोध्या पहुँचना था। 19 अक्टूबर को आडवाणी और वी.पी. सिंह के बीच बैठक हुई ताकि रथ यात्रा रुकवाई जा सके, लेकिन बिना परिणाम निकाले आडवाणी उस मीटिंग को छोड़ धनबाद चले गए और यह कहा कि यदि उनकी यात्रा रोकने की कोशिश हुई तो उनकी पार्टी

"मंडल के ख़िलाफ़ पूरे देश में हिंसा होने लगी। छात्रों ने आत्मदाह शुरू कर दिया"

25

निराशा का नया दौर

7 नवम्बर की रात, जब विश्वनाथ प्रताप सिंह अपना त्यागपत्र देने राष्ट्रपति भवन जा रहे थे, प्रधानमंत्री निवास के एक कर्मचारी ने लंबी साँस लेते हुए कहा था, *"आज़ादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि कोई प्रधानमंत्री निवास में रुपयों की थैली लेकर ग्यारह महीने तक घुस नहीं पाया।"* पर क्या देश को चलाने के लिए केवल ईमानदारी ही काफ़ी है ? क्या वी.पी. सिंह यही समझते रहे कि उनके मंत्रिमंडल में सभी उनकी तरह ईमानदार हैं ? क्या वे सचमुच

नहीं जान पाए कि उनके पाँव के नीचे से क़ालीन खिसकना कब शुरू हुआ और किनके द्वारा ? सवालों की सूची लंबी है। मेरे पास उन दिनों ऐसे लोगों की भीड़ रहती थी जो वी.पी. सिंह से प्यार करते थे पर उनसे बहुत नाराज़ भी थे। ऐसे लोगों को लगता था कि वे विफ़ल हो गए हैं और उन्हें फिर से लोगों का विश्वास प्राप्त करने के लिए काफ़ी इंतज़ार करना पड़ेगा। लोगों का दर्द यह जानना चाहता था कि क्या वी.पी. सिंह की राजनीति ग़लत थी ? लोगों ने क्या उनसे ग़लत आशाएँ लगाईं थीं ? लोग ऐसा क्या चाहते थे जो वी.पी. सिंह नहीं कर पाए ? वी.पी. सिंह के प्रति लोग वफ़ादार क्यों नहीं रह पाए ? क्या वी.पी. सिंह संगठन के ख़िलाफ़ थे ? क्या ग़ैर कांग्रेसवाद अब लोग पसंद नहीं करते ? क्या वी.पी. सिंह महज़ इतिहास के पन्नों की चीज़ होकर रह गए ? इन सवालों के उत्तर सीधे नहीं हैं। पूरे घटनाक्रम पर जब हम नज़र डालेंगे तब शायद तलाश कर पाएँ कि आख़िर गड़बड़ शुरू कहाँ से हुई।

1987 में जब विश्वनाथ प्रताप सिंह कांग्रेस के ख़िलाफ़ सारे देश में घूमे, हर जगह उन्होंने अपनी सीधी-सादी भाषा में बात समझाई तब लोगों के बीच अपनी दो तरह की छवि स्थापित की, पहली तो यह कि वे ईमानदार आदमी हैं और दूसरी यह कि वे लोगों के अपने आदमी हैं। उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिला दिया था कि अब जो सरकार बनेगी, वह सचमुच लोगों की सरकार बनेगी और वह देश की बुनियादी समस्याओं से लड़ेगी, नौजवानों ने विश्वनाथ प्रताप सिंह की इस बात पर विश्वास कर लिया था कि उन्हें सचमुच *`काम का अधिकार´* मिलेगा और बेरोज़गारी के जंगल से निकलने में कुछ मदद मिलेगी।

26

उन दिनों कांग्रेस का हाल क्या था

1989 की लोकसभा बहुत महत्वपूर्ण लोकसभा थी। यह राजीव गाँधी के जीवन की आख़िरी लोकसभा थी। इसके बाद दुर्भाग्य ने उनकी जान लिट्टे के आतंकवादी हमले में ले ली। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दो बयान याद आते हैं... उनका पहला बयान था... *"देश को कांग्रेस मुक्त कर दूँगा"* उन्होंने दूसरा बयान दिया था... *"कांग्रेस मुक्त से मेरा मतलब कांग्रेस कल्चर से देश को मुक्त करूँगा।"* लेकिन 1989 में वी.पी. सिंह ने प्रधानमंत्री रहते हुए

ऐसा कोई बयान नहीं दिया। हम लोगों में दो बार कांग्रेस को लेकर बातचीत हुई थी। मैं उस बातचीत का सार यहाँ अवश्य लिखना चाहता हूँ।

वी.पी. सिंह ने कहा था, *"मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं कि कांग्रेस (आई) ज़िंदा रहे। कांग्रेस (आई) न केवल ज़िंदा रहे, बल्कि देश में एक जागरूक विपक्षी दल की सार्थक भूमिका भी निभाती रहे और लोगों का यह विश्वास न टूटने दे कि उनकी तकलीफ़ों के लिए आवाज़ उठाने वाला कोई नहीं बचा है। जो सरकार बनी है वह पूरे तौर पर जनता की आकाँक्षा-पूर्ति के लिए वचनबद्ध है, फिर भी कहीं ठहराव आ जाता है, क्योंकि जो व्यवस्था हमारे देश में है और जिसे पिछले चालीस साल से मज़बूत बनाया गया है वह पूरे तौर पर जनता के बुनियादी हितों के ख़िलाफ़ है। इस सरकार को उसी व्यवस्था से जनता के हित के फ़ैसले करवाने हैं। यही आज का अंतर्विरोध है। इस ठहराव के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की ज़िम्मेदारी कांग्रेस की है। पर मैं उन भाग्यशालियों में नहीं हूँ जिनकी इच्छाएँ पूरी होतीं हैं। मैं उन करोड़ों हिन्दुस्तानियों के बीच की एक इकाई हूँ जो अच्छाई का, बदलाव का सपना देखते हैं और अपने लिए लड़ने वाली जमात तलाश करते-करते निराशा के गर्त में चले जाते हैं। संसद में कांग्रेस का व्यवहार उनके उठाए जाने वाले विषय, उनके द्वारा की गई बहस का स्तर, सभी इस बात की पुष्टि करते हैं कि यदि देश के लोगों ने कहीं यह इच्छा पाल रखी है कि कांग्रेस उनके लिए सशक्त एवं मुखर विपक्ष का काम करेगी तो यह बहुत बड़ा भ्रम है।"*

"कांग्रेस (आई) न केवल ज़िंदा रहे, बल्कि देश में एक जागरूक विपक्षी दल की सार्थक भूमिका भी निभाती रहे"

कांग्रेस इतने दिनों सत्ता में रही, कभी संसद में बुनियादी सवालों पर उसने चर्चा नहीं होने दी। उसने हमेशा बेकार की बातों को मुद्दा बनाया और उसे इस पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है कि सारा देश एक बड़े सवाल के कठघरे में खड़ा हो गया। आज भी कांग्रेस जब विपक्ष में बैठी है, तब भी उसे देश के बुनियादी सवाल याद नहीं

27

आमरण अनशन, किसान मंच और डायलिसिस

6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद ध्वस्त कर दी गई। किसने गिराई, कौन-कौन शामिल था इसका पता कभी नहीं चलेगा, लेकिन हज़ारों लोगों का समूह था जिसने आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और उमा भारती की उपस्थिति में बाबरी मस्जिद ढहा दी। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप देश में दंगे शुरू हुए जिसमें सबसे भीषण दंगा बम्बई और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में हुआ। इन दंगों को नियंत्रित करने की कोई कोशिश पुलिस ने नहीं की। इसमें दंगाइयों के साथ

शिवसेना से हमदर्दी रखने वाले लोग भी शामिल हो गए। वी.पी. सिंह इस स्थिति से बहुत परेशान हो गए। उन्होंने बम्बई में आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया और घोषणा की, कि जब तक दंगे नहीं रुकेंगे, वे न कुछ खाएँगे, न पानी पिएँगे।

अनशन का भी एक शास्त्र है, जिसे आज़ादी के आंदोलन में विकसित किया गया था, स्वयं महात्मा गाँधी के द्वारा। आज़ादी से पहले और आज़ादी के बाद समाजवादियों ने इस शास्त्र में विशेषज्ञता हासिल की । पहले नींबू पानी पीते हैं, फिर नींबू हटा देते हैं और अंत में सिर्फ़ पानी पीते हैं। आज़ादी के आंदोलन में शहीद भगत सिंह के साथी यतींद्रनाथ दास ने, जो उनके साथ जेल में बंद थे, उन्होंने आमरण अनशन किया था और पानी भी नहीं पिया। उन्हें जेलर ने ज़बरदस्ती नाक में नली डालकर पानी और दूध पिलाना चाहा जिसका उन्होंने जी जान से विरोध किया, पर ज़बरदस्ती की वजह से वह सारा द्रव्य उनके फेफड़ों में चला गया, जिससे उनकी शहादत सरदार भगत सिंह, राजगुरू और अशफ़ाक़ उल्लाह ख़ाँ से पहले हो गई। इसी तरह अकाली नेता दर्शन सिंह फ़ेरूमान ने आमरण अनशन किया और उनकी मौत भी लगभग साठ दिनों के बाद हो गई।

"मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें गिरफ़्तार कर अस्पताल ले जाने का आदेश दे दिया"

वी.पी. सिंह ने पहले दिन से न कुछ खाया और न ही पानी पिया। उनके शरीर में पानी की कमी हो गई। सातवें दिन डॉक्टरों ने कहा कि अगर इन्होंने अनशन नहीं तोड़ा तो कुछ घंटों के बाद इनके मस्तिष्क को आघात लगेगा। मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें गिरफ़्तार कर अस्पताल ले जाने का आदेश दे दिया। पुलिस उन्हें अस्पताल ले गई और ज़बरदस्ती पानी देने और खिलाने की तैयारी करने लगी।

28

अब मुझे आज़ाद कर दीजिए

मेरे लिए एक समस्या पैदा हो गई थी कि एक तरफ़ वी.पी. सिंह कहते थे कि किसानों के बीच जाना बन्द नहीं करना है और विनोद सिंह के ऊपर यह दबाव डालते थे कि वे उनका कार्यक्रम बनाएँ। दूसरी तरफ़ डॉक्टर चिंतित रहते थे, लेकिन यह कोई नहीं समझ पा रहा था कि वी.पी. सिंह के जीने की ताक़त के पीछे लोगों के बीच उनका जाना और लोगों की उनके लिए प्रार्थना की शक्ति थी।

इस स्थिति ने श्रीमती वी.पी. सिंह के मन में गुस्सा भर दिया था। उन्होंने मुझे कई बार कहा कि वी.पी. सिंह को इतना ज़्यादा न दौड़ाया जाए। मैं असहाय था। एक तरफ़ रानी सीता देवी यानी श्रीमती वी.पी. सिंह सही थीं, वहीं दूसरी तरफ़ वी.पी. सिंह का प्रोग्राम अगर एक दिन नहीं रहता तो वे बेचैन हो जाते थे। वे हमेशा लोगों के बीच जाते रहना चाहते थे। उनके मन में था, "*मुझे बिस्तर पर लेट कर मौत का इंतज़ार नहीं करना है।*" उन्हें अपनी बीमारी की गंभीरता का, उसके विस्तार का और आने वाले समय में ख़तरे का पूरा ज्ञान था। वे सारी ज़िन्दगी लोगों के बीच लोगों के लिए रहे थे, इसीलिए अब भी वे लोगों के बीच ज़्यादा से ज़्यादा समय गुज़ारना चाहते थे। जब समय मिलता तब वे पेंटिंग बनाते थे, उनकी पेंटिंग्स काफ़ी मशहूर हुईं। उनकी बनाई पेंटिंग की प्रदर्शनियों में से रामविलास पासवान ने पचहत्तर हज़ार में एक पेंटिंग ख़रीदी। बम्बई में बिकी एक पेंटिंग *'क्रो'* यानी कौआ बहुत मशहूर हुई। दिल्ली में उनकी पेंटिंग्स की प्रदर्शनियाँ कुँवर प्रज्ञा करवाते थे और उनकी पेंटिंग्स की बिक्री देश-विदेश में करते थे। वे ऐसी पेंटिंग्स के और पुरानी वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संग्रहक हैं। उन्होंने वी.पी. सिंह के चित्रों को लेकर एक *कॉफ़ी टेबल बुक* भी छापी है।

"जब समय मिलता तब वे पेंटिंग बनाते थे उनकी पेंटिंग्स काफ़ी मशहूर हुईं"

वी.पी. सिंह की कविताएँ बहुत ही सारगर्भित होती थीं। उन्होंने लिखा...

तुम मुझे क्या ख़रीदोगे,
मैं मुफ़्त हूँ।

29

चंद्रशेखर

चंद्रशेखर जी से मेरा परिचय लोकनायक जयप्रकाश नायारण ने करवाया था। चंद्रशेखर जी को जानता तो मैं बहुत पहले से था क्योंकि उनका नाम *'युवा तुर्क'* के नाम से हर भारतवासी के दिल और दिमाग़ में बैठ चुका था। यह संयोग सन् 1977 के चुनाव के समय पैदा हुआ। जयप्रकाश जी मुझे प्यार करते थे और मेरे भविष्य के प्रति शायद चिंतित थे। मैं उन घटनाओं को नहीं लिख रहा, जिसकी वजह से जे.पी के मन में मेरे लिए स्नेह पैदा हुआ। जे.पी ने

बिहार आंदोलन को सारे देश में फैलाने के लिए अट्ठारह लोगों की समिति बनाई थी जिसका संयोजक उन्होंने ओम प्रकाश दीपक को बनाया था। मैं उसका एक सदस्य था। मैं सारे देश में उनके निर्देशानुसार घूमा था और मैंने जितना हो सकता था *जयप्रकाश आंदोलन* को देश भर में फैलाने के लिए काम किया था। उस समिति में प्रो० रमेश दीक्षित, प्रो० आनंद कुमार तथा सत्यदेव त्रिपाठी के नाम भी शामिल थे। आपातकाल में, मैं पहले भूमिगत *(अन्डर ग्राउंड)* था फिर गिरफ़्तार हुआ उसके बाद फिर मैं भूमिगत हो गया। प्रसिद्ध साप्ताहिक अख़बार *ब्लिट्ज़* ने एक बड़ी रिपोर्ट मेरे ऊपर छापी थी जिसमें ख़ुलासा किया था कि केंद्र सरकार मेरी गतिविधियों को देश के लिए ख़तरनाक मानती है क्योंकि मैं सशस्त्र विद्रोह के लिए लोगों को संगठित करता घूम रहा हूँ और मुझे देखते ही गोली मारी जा सकती है। इस रिपोर्ट में मुझे जॉर्ज फ़र्नांडिस का सबसे निकटतम सहयोगी बताया गया था। जे.पी, चण्डीगढ़ में पी.जी.आई हॉस्पिटल में गिरफ़्तार थे और उनकी किडनी ख़राब हो चुकी थी, ऐसा संदेह था।

"मैं सशस्त्र विद्रोह के लिए लोगों को संगठित करता घूम रहा हूँ और मुझे देखते ही गोली मारी जा सकती है"

मैं किसी तरह जे.पी से चण्डीगढ़ जाकर मिलना चाहता था। मेरे पास कोई रास्ता नहीं था, तभी मुझे पता चला कि अमरनाथ भाई और प्रोफ़ेसर जाबिर हुसैन शायद चण्डीगढ़ जा रहे हैं। मैं उन्हें तलाश करता हुआ पहुँचा तो दोनों चण्डीगढ़ जाकर जे.पी से जेल में मिलने की तैयारी कर रहे थे। मैं भी साथ चलने की ज़िद करने लगा। गिरफ़्तार होने का डर था क्योंकि मैं, *मीसा* के वारंट के आगे भाग

30

मोरारजी देसाई

सन् 1980 के चुनावों में *जनता पार्टी* टूटी हुई पार्टी के रूप में जनता के बीच गई। मोरारजी भाई की जगह चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बन गए थे, उन्हें कांग्रेस का समर्थन था। इसे बनाने में संजय गाँधी का बहुत बड़ा हाथ था। उन्होंने राजनारायण की मदद से जिसमें ग़ाज़ियाबाद के एक बड़े शराब व्यापारी ने, राजनारायण और संजय गाँधी की गुप्त मुलाक़ातें करवाईं थीं, *जनता पार्टी* सफ़लतापूर्वक तोड़ दी गई थी। चुनावों में चंद्रशेखर ने पार्टी अध्यक्ष

के नाते अथक मेहनत की थी, लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला। इंदिरा जी की सरकार बन गई। जनता बहुत नाराज़ थी। उसे लगा कि विपक्ष के लोगों को सत्ता देकर उसने बहुत बड़ी ग़लती की है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के प्रति श्रद्धा, उनके आश्वासन और प्रचार के कारण *जनता पार्टी* को दिए गए अपार समर्थन ने भी *जनता पार्टी* के नेताओं को कोई सीख नहीं दी। वे तीन सालों तक एक दूसरे के ख़िलाफ़ षड्यंत्र करते रहे। हालांकि जनता की समस्याएँ नहीं बड़ीं, उन्हें कोई नई परेशानी नहीं हुई पर देश के लोग मोरारजी भाई, जगजीवन राम और चरण सिंह के झगड़ों से नाराज़ हो गए थे।

अगस्त 1979 का पहला हफ़्ता था। संपादक सुरेंद्र प्रताप सिंह के साथ विशेष संवाददाता उदयन शर्मा और मैं, दिल्ली में इस स्थिति के ज़िम्मेदार लोगों से बात करने गए। हम तीनों ने कार्यवाहक प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई से सबसे पहले बातचीत करनी चाही। उन्होंने समय ही नहीं दिया, तब मैंने प्रसिद्ध समाजवादी नेता कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया से बात की। उन्होंने मोरारजी भाई को बातचीत के लिए तैयार किया। हम तीनों प्रधानमंत्री निवास गए। इस दृश्य का वर्णन स्वयं संपादक एस.पी. सिंह ने अपनी क़लम से लिखा। इंटरव्यू मैंने किया, मोरारजी भाई के इंटरव्यू के बाद मैंने राजनारायण, जगजीवन राम, डॉ॰ कर्ण सिंह, चंद्रशेखर और कमलापति त्रिपाठी से बात की। यह सारी बातचीत जो सन् 1977 के बाद की मानसिकता से परिचय करवाती है, *रविवार* के 12 अगस्त 1979 के अंक में छपी जिसे संपादक सुरेंद्र प्रताप सिंह और मेरे नाम से छापा गया था। एस.पी. सिंह ने इसका शीर्षक दिया था, *"इस स्थिति के लिए ज़िम्मेदार लोग क्या कहते हैं ?"*

"वे तीन सालों तक एक दूसरे के ख़िलाफ़ षड्यंत्र करते रहे"

31

23 जून को आने वाला समय बदल जाएगा

1980 से 1984 के बीच विभिन्न दलों को एक करने की कई कोशिशें हुईं, लेकिन आपसी ईमानदारी न होने और परस्पर अविश्वास ने असफ़लता पहले ही लिख दी थी। लोकदल से राजनारायण ने त्यागपत्र दे दिया था, राज्यसभा के चुनाव में राजनारायण को हराने के लिए लोकदल और कांग्रेस (आई) में समझौता हो गया था इसलिए *जनता पार्टी* ने राजनारायण को द्वितीय वरीयता के मत नहीं दिए थे, जिससे वे चुनाव हार गए थे। सभी

अपना-अपना बदला निकाल रहे थे। चंद्रशेखर भी इस घात-प्रतिघात से मन ही मन खिन्न थे। उनके पास तमिलनाडु के युवक आए और उन्होंने कन्याकुमारी से दिल्ली तक की पदयात्रा का सुझाव दिया। इस सुझाव से चंद्रशेखर के साथी बहुत सहमत नहीं थे, लेकिन चंद्रशेखर के मन में मंथन चल रहा था। उन्होंने पदयात्रा का मन बना लिया और सुधीन्द्र भदौरिया को इस यात्रा की तैयारी का निर्देश दिया। सुधीन्द्र भदौरिया के पिता कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया और माँ सरला भदौरिया डॉ० राममनोहर लोहिया के ख़ास अंतरंग थे।

डॉ० लोहिया की मृत्यु के बाद चंद्रशेखर से उनके बहुत आत्मीय संबंध हो गए थे। सरला भदौरिया, महात्मा गाँधी के सेवाग्राम आश्रम में गाँधी जी के साथ रही थीं। वहीं उनकी मित्रता मेरी माँ उर्मिला भारतीय से हुई। दोनों ही गाँधी जी की प्रिय शिष्या रहीं। कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया और सरला भदौरिया आज़ादी के आंदोलनों में जेल जाते रहे। वहीं मेरे पिता भैरव सिंह भारतीय और माँ भी अंग्रेज़ों की जेलों में भारत को आज़ाद करवाने के लिए जाते रहे।

“वहीं मेरे पिता भैरव सिंह भारतीय और माँ भी अंग्रेज़ों की जेलों में भारत को आज़ाद करवाने के लिए जाते रहे”

सुधीन्द्र भदौरिया से चंद्रशेखर के कई साथी जलते थे। उन्हें लगता था कि भारत यात्रा की ज़िम्मेदारी उन्हें दी जानी चाहिए थी। इन सबने मुझे सफ़लतापूर्वक ऐसी सूचनाएँ दीं, जिनकी सत्यता की जाँच मैं तब नहीं कर पाया और मैंने उस समय की मशहूर पत्रिका *'माया'* में सुधींद्र भदौरिया को निशाना बनाते हुए एक लम्बी रिपोर्ट लिखी। मेरे पत्रकारीय जीवन की वह अकेली रिपोर्ट है जिसे मैं अपने लिए धब्बा मानता हूँ।

32

चंद्रशेखर हार गए

1984 का चुनाव विपक्षी दलों के लिए विनाश का तूफ़ान लेकर आया। सारे दल और सारे नेता कांग्रेस या कहें कि राजीव गाँधी की आँधी में, तिनकों की तरह उड़ गए। चंद्रशेखर चुनाव हार गए। वे तीन दिनों तक अपनी झोंपड़ी में बंद हो गए। उन्हें इतना धक्का लगा कि वे किसी से मिले तक नहीं। मैंने जितनी सभाएँ चंद्रशेखर की देखीं थीं, वे कहीं से यह संकेत नहीं दे रहीं थीं कि तूफ़ान आने वाला है... विनाशकारी तूफ़ान!

चंद्रशेखर के लिए एक और समस्या खड़ी हो गई थी। उनके पास दिल्ली में कोई घर नहीं था, या तो उन्हें परिवार सहित बलिया लौटना पड़ता या किराये के मकान में जाना पड़ता। चंद्रशेखर का परिवार संयुक्त परिवार था। उनके साथ उनके छोटे भाई कृपा शंकर रहते थे, जिनके बेटे-बेटियाँ थे। चंद्रशेखर के भी दो बेटे थे, अब तक सब *3-साउथ ऐवेन्यू* में रहते थे। तभी एक सूचना आई जिसने राजनीति के एक सुखद पहलू से परिचय करवाया।

राजीव गाँधी प्रधानमंत्री बन गए थे। उनके साथ चार सौ चौदह सांसदों का समर्थन था। उन्होंने अब्दुल ग़फ़ूर को अपने मंत्रिमंडल में लिया था और उन्हें शहरी विकास मंत्रालय दिया था, जिसमें सांसदों की आवास व्यवस्था भी आती थी। चंद्रशेखर अपने भावी निवास को लेकर चिंतित थे। चंद्रशेखर के एक मित्र ने ग़फ़ूर साहब से पूछा कि कब तक चंद्रशेखर *साउथ ऐवेन्यू* में रह सकते हैं, तो ग़फ़ूर साहब ने मुस्कुराते हुए कहा, *"हमेशा"* वे सज्जन चौंक गए। तब ग़फ़ूर साहब ने कहा कि उन्हें राजीव गाँधी ने आदेश दिया है, *"चंद्रशेखर जी को 3-साउथ ऐवेन्यू में ही रहने दिया जाए। इसके लिए उन्होंने एक नया नियम बनाया है, अभी तक यह नियम नहीं था कि कोई संसद का चुनाव हारने के बाद भी घर में रह सके। राजीव गाँधी ने कहा चंद्रशेखर जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। इसीलिए उन्होंने मुझसे कहा कि नियम बनाइए कि किसी भी पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष मकान में रह सकता है जब तक वह पार्टी का अध्यक्ष रहता है।"* चंद्रशेखर ने मुझको एक दिन बाद में बताया कि शायद इंदिरा जी ने राजीव गाँधी को या अपने परिवार के लोगों को 1977 की वह घटना बताई होगी जब इंदिरा जी हार गईं थीं और चंद्रशेखर ने जाकर उन्हें आश्वासन दिया था कि सरकार उनके लिए

33

रामकृष्ण हेगड़े

सन् 1985 में *जनता पार्टी* के बीच काफ़ी सोच विचार और मंथन चला। पहली बार चंद्रशेखर के ख़िलाफ़ अध्यक्ष बदलने जैसी बात उठी। चंद्रशेखर के बारे में बात हो और रामकृष्ण हेगड़े की चर्चा न हो, ऐसा संभव नहीं है।

यद्यपि 1984 में *जनता पार्टी* बुरी तरह लोकसभा का चुनाव हार गई थी पर 1985 की शुरुआत में ही 1989 में होने वाले लोकसभा चुनावों की बिसात बिछाई जाने लगी थी। रामकृष्ण हेगड़े ने तो

दिल्ली चलो अभियान एक तरह से प्रारंभ ही कर दिया था। सवाल उठ गया था कि क्या रामकृष्ण हेगड़े राष्ट्रीय राजनीति में वापस लौटेंगे? लोकसभा चुनावों के तत्काल बाद चंद्रशेखर की जगह रामकृष्ण हेगड़े को *जनता पार्टी* का अध्यक्ष बनाए जाने की बातें होने लगीं थीं। विधानसभा चुनावों के बाद फिर रामकृष्ण हेगड़े के दिल्ली लौटने और 1989 में उन्हें राजीव गाँधी के विकल्प के रूप में उभारने की कोशिश शुरू हो गई थी।

कर्नाटक में दोबारा मुख्यमंत्री बनने के बाद, रामकृष्ण हेगड़े को राजीव गाँधी के विकल्प के रूप में पेश किया जा रहा था। हेगड़े की ख्याति दूसरे *'मिस्टर क्लीन'* सौम्य एवं आकर्षक राजनीतिज्ञ की थी। देश के बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग उन्हें ऐसे राजनीतिज्ञ के रूप में देख रहा था, जो एक दल और एक परिवार के शासन पर लगाम लगा सकते थे। उन्हें अगले आम चुनावों में विपक्ष की आशा के रूप में भी देखा जा रहा था। देश में हेगड़े के प्रशंसकों की एक पूरी जमात तैयार हो गई थी, जो उन्हें विपक्ष का अवतार मानने लगी थी।

लेकिन क्या रामकृष्ण हेगड़े अपने प्रशंसकों की आकाँक्षाओं को पूरा करने के लिहाज़ से राष्ट्रीय राजनीति में आना चाहते थे? इस सवाल के जवाब के लिए हेगड़े के व्यक्तित्व और उनकी राजनीति की विशेषताओं के बारे में जानना ज़रूरी है। रामकृष्ण हेगड़े की गिनती देश के चतुर, सतर्क एवं संयमित राजनीतिज्ञों में की जाती थी। कर्नाटक में भारी बहुमत से दोबारा मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने एक वक्तव्य दिया, जिसके दूरगामी निष्कर्ष निकलते थे। अंग्रेज़ी साप्ताहिक *'संडे'* को दिए गए अपने साक्षात्कार में उन्होंने कहा था, *"वे मुख्यमंत्री का पद छोड़कर राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा (दिल्ली) में आना पसंद करेंगे।"* प्रायः गंभीर और बहुत

34

कश्मीर आपको दिया

इसके बाद की घटनाएँ देश के इतिहास में पूरी तरह शामिल नहीं हुईं। जैसे *जे.पी आंदोलन* के बारे में सही मूल्यांकन और रेखांकन नहीं हुआ वैसे ही विश्वनाथ प्रताप सिंह को केंद्र मान सन् 1987 से 1989 तक जो आंदोलन हुआ उसका भी मूल्यांकन नहीं हुआ। चंद्रशेखर के आस-पास ऐसे लोगों की भीड़ थी जो चंद्रशेखर को हमेशा समझाती रहती थी कि वी.पी. सिंह का प्रधानमंत्री बनना उनका कितना बड़ा अपमान है। चंद्रशेखर भी प्रधानमंत्री बने, पर

उनका भी सही मूल्यांकन नहीं हुआ। यद्यपि चंद्रशेखर ने शपथ लेने के बाद से ही सही क़दम उठाने शुरू कर दिए थे। उन्हें रोज़ाना एक नई चुनौती का सामना करना पड़ता था।

प्रधानमंत्री बनने के तत्काल बाद उसी दिन उन्हें *माले* जाना पड़ा जहाँ राष्ट्रमंडल देशों के प्रधानमंत्रियों का सम्मेलन था। उसमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ भी आए थे। जहाँ पहले नवाज़ शरीफ़ का भाषण हुआ वहीं उसके बाद भारत के प्रधानमंत्री चंद्रशेखर का। चंद्रशेखर भाषण समाप्त कर मंच से जैसे ही नीचे उतरे उन्हें नवाज़ शरीफ़ दिखाई दिए जो उनकी तरफ़ बढ़े आ रहे थे। चंद्रशेखर की एक ख़ासियत थी कि वे हर एक से अनौपचारिक व्यवहार करते थे। नवाज़ शरीफ़ जैसे ही पास आए चंद्रशेखर ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा, *"आप बहुत बदमाशी करते हैं।"* बदमाशी शब्द में चंद्रशेखर का कितना अपनापन था, इसे नवाज़ शरीफ़ समझ गए, बोले, *"आप बदमाशी का कारण दूर कर दीजिए।"* खड़े-खड़े ही चंद्रशेखर ने पूछा, *"क्या कारण है मैं दूर कर देता हूँ।"* नवाज़ शरीफ़ ने कहा, *"कश्मीर हमें दे दीजिए बदमाशी ख़त्म हो जाएगी।"* चंद्रशेखर ने दस सेकेंड तक नवाज़ शरीफ़ के चेहरे को देखा और बोले, *"कश्मीर आपको दिया।"* नवाज़ शरीफ़ के चेहरे पर ख़ुशी और सब कुछ पा लेने का भाव चमकने लगा। उन्हें लगा कि उन्होंने इतिहास को जीत लिया है, बोले, *"तो आइए बात कर लेते हैं।"* चंद्रशेखर और नवाज़ शरीफ़ एक छोटे कमरे में चले गए। नवाज़ शरीफ़ ने

"चंद्रशेखर ने दस सेकेंड तक नवाज़ शरीफ़ के चेहरे को देखा और बोले कश्मीर आपको दिया"

"नवाज़ शरीफ़ जैसे ही पास आए चंद्रशेखर ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा, आप बहुत बदमाशी करते हैं"

35

चंद्रशेखर का मंत्रिमंडल इतिहास का अजूबा था

पंजाब समस्या पर बात करने सिमरनजीत सिंह मान, प्रधानमंत्री से मिलना चाहते थे लेकिन प्रधानमंत्री के सुरक्षा अधिकारी मिलने नहीं दे रहे थे। कारण था कि सिमरनजीत सिंह मान कृपाण के साथ आने की ज़िद पकड़े थे। जब चंद्रशेखर को पता चला तो उन्होंने सुरक्षा अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे मान साहब को कृपाण के साथ ही आने दें। सिमरनजीत सिंह मान आए, कृपाण के साथ आए, आधे घंटे से ज़्यादा रहे, अपना माँग-पत्र दिया जिसे

प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने देखा और उसमें से काफ़ी माँगे मान लीं। प्रधानमंत्री कार्यालय को डर था कि सिमरनजीत सिंह मान ख़ालिस्तान की बात करेंगे और प्रधानमंत्री का उत्तर, देश में नया विवाद पैदा कर देगा। चंद्रशेखर मानसिक रूप से उत्तर देने के लिए तैयार थे पर न सिमरनजीत सिंह मान के ज्ञापन में ख़ालिस्तान शब्द था और न उन्होंने अनौपचारिक बातचीत में इसे उठाया। चंद्रशेखर ने कभी परिस्थिति को टालने की कोशिश नहीं की, हर चुनौती का सामना किया।

चंद्रशेखर का मंत्रिमंडल इतिहास का अजूबा था, उनके साथ जितने सांसद थे, लगभग सभी मंत्री थे। उन्होंने अपने साथ राज्यसभा सांसद कमल मोरारका को राज्यमंत्री बनाया। वे देश के हर सवाल पर कमल मोरारका की राय लेते थे और सभी टेढ़े मामले सुलझाने की ज़िम्मेदारी उन्हें दे देते थे। उनके सभी विश्वस्त थे। लेकिन कमल मोरारका और यशवंत सिन्हा सबसे ख़ास थे, इन्हीं में एक मंत्री थे सुब्रमण्यम स्वामी। सुब्रमण्यम स्वामी वित्तमंत्री बनना चाहते थे लेकिन चंद्रशेखर ने यशवंत सिन्हा को वित्तमंत्री बनाया था। सुब्रमण्यम स्वामी को लगता था कि उनके वित्तमंत्री न बनने के पीछे सिर्फ़ कमल मोरारका का हाथ है। मैंने पहले चंद्रशेखर से और बाद में कमल मोरारका से सत्य जानना चाहा था। सत्य यह था कि यह फ़ैसला सिर्फ़ चंद्रशेखर का था। चंद्रशेखर के तीसरे सबसे विश्वस्त थे दिग्विजय सिंह जो बाँका, बिहार के रहने वाले थे और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र नेता थे। चंद्रशेखर उनकी प्रतिभा के प्रशंसक थे। वे उन्हें बिहार से राज्यसभा में लाए थे

“वे देश के हर सवाल पर कमल मोरारका की राय लेते थे और सभी टेढ़े मामले सुलझाने की ज़िम्मेदारी उन्हें दे देते थे”

36

यहाँ, संयोग कैसे बनते हैं

राजीव गाँधी, वी.पी. सिंह को उनकी इच्छानुसार दक्षिण भारत कांग्रेस की ज़िम्मेदारी सौंप देते, तो वे आज जीवित होते। यदि वे वी.पी. सिंह को कांग्रेस से न निकालते तो जीवित होते। यदि वे वी.पी. सिंह को चुनौती नहीं देते तो वी.पी. सिंह उनके ख़िलाफ़ अभियान नहीं चलाते बल्कि इलाहाबाद जाकर राजनीति से सन्यास लेकर समय गुज़ारते तब भी वे जीवित होते। यदि राजीव गाँधी, वी.पी. सिंह सरकार न गिराते और चंद्रशेखर की सरकार न बनवाते तो

जीवित होते। यदि वे चंद्रशेखर की सरकार भी न गिराते तो भी ज़िंदा होते। सबसे आख़िर में, यदि वे चंद्रशेखर और भीष्म नारायण सिंह की सलाह मान तमिलनाडु का दौरा रद्द कर देते और श्रीपेरंबदुर न जाते तो भी वे जीवित होते, पर मौत उनके ख़िलाफ़ साज़िश रच रही थी और उनका दुर्भाग्य ऐसा रास्ता बना रहा था जो श्रीपेरंबदुर जाकर समाप्त हो गया।

आम चुनावों में कांग्रेस ने सारे देश में राजीव गाँधी की भस्म घुमाई। लोकसभा का हर उम्मीदवार भस्म कलश लेकर घूमने लगा। इससे परिणाम कांग्रेस के पक्ष में गए पर परिणाम का एक बँटवारा दिखाई दिया। राजीव गाँधी की हत्या से पहले वोटिंग का एक दौर पूरा हो चुका था। उनकी हत्या की वजह से दूसरे दौर की वोटिंग स्थगित हो गई। एक महीने के बाद वोटिंग हुई। दूसरे दौर में कांग्रेस को बहुत सीटें मिल गईं। नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अपना वित्तमंत्री मनमोहन सिंह को बनाया जो अब तक चंद्रशेखर के आर्थिक सलाहकार थे।

“मौत उनके ख़िलाफ़ साज़िश रच रही थी और उनका दुर्भाग्य ऐसा रास्ता बना रहा था जो श्रीपेरंबदुर जाकर समाप्त हो गया”

लोकसभा का अधिवेशन प्रारंभ हुआ। बजट सत्र चल रहा था। इसमें वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने नई आर्थिक नीतियों की घोषणा की। ये सारी नीतियाँ *बाज़ारवाद* को लाने वाली थीं। नेहरू के समय की आर्थिक नीतियाँ त्याग दी गईं। अब सामाजिक सुरक्षा सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं थी। संसद में इस पर काफ़ी बहस हुई। मनमोहन सिंह बजट रखने के बाद अपनी आर्थिक नीतियों की विशेषता देश को बता रहे थे कि बीस वर्षों बाद

“नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अपना वित्तमंत्री मनमोहन सिंह को बनाया जो अब तक चंद्रशेखर के आर्थिक सलाहकार थे”

37

सोनिया गाँधी

सोनिया गाँधी से जुड़ी कई घटनाएँ हैं, जिन्होंने मुझे एक बड़े राजनीतिक फ़ैसले का महत्वपूर्ण गवाह बना दिया। कैसे सोनिया गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने का फ़ैसला हुआ, उसमें वी.पी. सिंह के साथ चंद्रशेखर की क्या भूमिका थी और कैसे सभी नेता तैयार हुए। ये वही नेता थे जिन्होंने एक होकर राजीव गाँधी को सत्ता से हटाया था और ठीक पंद्रह साल बाद राजीव गाँधी की पत्नी और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने की मुहीम

वह व्यक्ति शुरू कर रहा था जिसने राजीव गाँधी को सत्ता से हटाने में केंद्रीय भूमिका निभाई थी, वे थे विश्वनाथ प्रताप सिंह। लेकिन इस ऐतिहासिक घटना से पहले कुछ और बातें हैं जिन्हें जानना आवश्यक है और फिर मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री बनने के पीछे के असली कारण क्या थे, मैं आपको यह बताऊँगा।

मेरी सोनिया गाँधी से पहली मुलाक़ात शीला दीक्षित ने करवाई थी। राजस्थान विधानसभा के चुनाव आने वाले थे। कांग्रेस इस चुनाव में अपनी सरकार बनाना चाहती थी पर वहाँ का प्रमुख सामाजिक वर्ग मुसलमान कांग्रेस के साथ नहीं था। सोनिया गाँधी चाहती थीं कि किसी तरह सभी वर्गों को साथ लेकर राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बने। *मिल्ली काउंसिल* के महासचिव डॉ० मंज़ूर आलम ने राजस्थान के महत्वपूर्ण मुस्लिम नेताओं से सम्पर्क किया और *मिल्ली काउंसिल* और अन्य नेताओं को सोनिया गाँधी से मिलने के लिए तैयार किया। शीला दीक्षित ने इस मीटिंग की व्यवस्था करवाई और वे स्वयं बैठक में उपस्थित रहीं। मीटिंग में मुस्लिम नेताओं ने अपनी समस्याएँ रखीं और सोनिया गाँधी से कहा कि वे वादा करें कि कांग्रेस की सरकार बनने पर वे इन माँगों को पूरा करवाएँगी। सोनिया गाँधी ने वादा कर लिया। सभी मुस्लिम नेताओं ने विधानसभा में जी-जान से मेहनत की और मुस्लिम समाज को कांग्रेस के पक्ष में वोट देने के लिए तैयार कर लिया। डॉ० मंज़ूर आलम ने पूरा समय राजस्थान में लगाया।

‘ डॉ० मंज़ूर आलम ने राजस्थान के महत्वपूर्ण मुस्लिम नेताओं से सम्पर्क किया और मिल्ली काउंसिल और अन्य नेताओं को सोनिया गाँधी से मिलने के लिए तैयार किया ’

चुनाव का परिणाम आया और कांग्रेस जीत गई। कांग्रेस की जीत 6% वोटों से हुई थी। यह वही प्रतिशत है जो राजस्थान में मुस्लिम

प्रधानमंत्री आई.के. गुजराल । प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह । संतोष भारतीय
प्रधानमंत्री चंद्रशेखर । प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा

संतोष भारतीय । प्रधानमंत्री आई.के. गुजराल

रसायन एवं उर्वरक मंत्री रामविलास पासवान । संतोष भारतीय

वित्तमंत्री वी.पी. सिंह । संतोष भारतीय । चंद्रशेखर
जादूगर मदन कुंडू । चौथी दुनिया समूह एवं अन्य

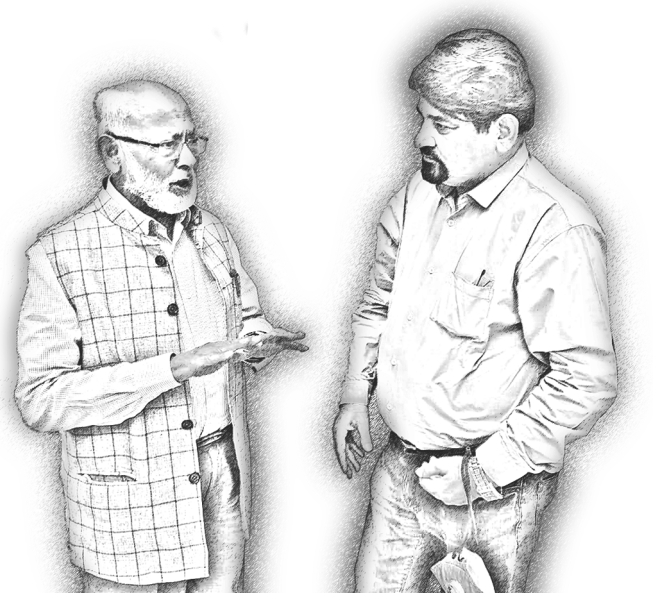

डॉ. मंज़ूर आलम । संतोष भारतीय

संतोष भारतीय । रेखा । शबाना आज़मी

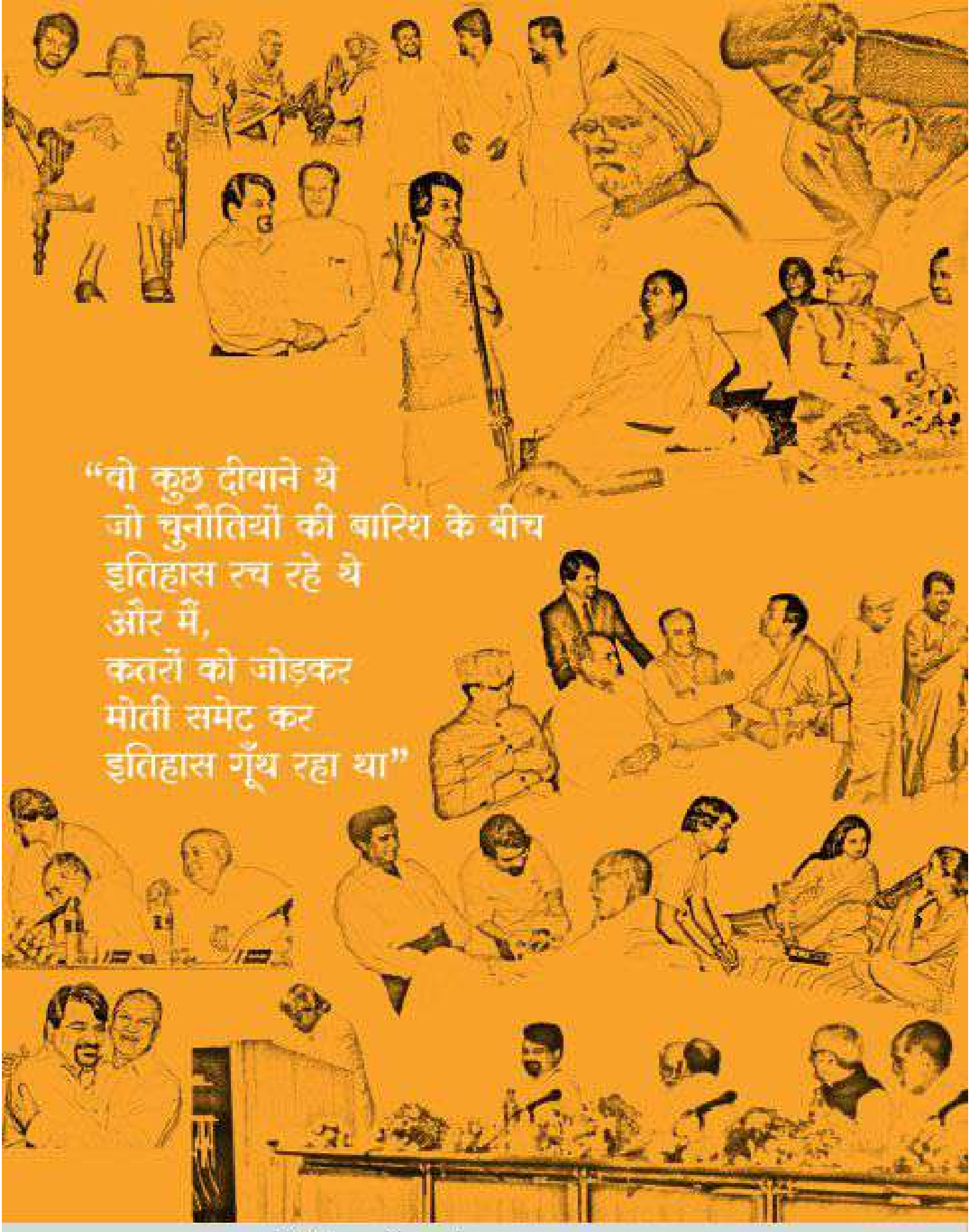

"वो कुछ दीवाने थे
जो चुनौतियों की बारिश के बीच
इतिहास रच रहे थे
और मैं,
कतरों को जोड़कर
मोती समेट कर
इतिहास गूँथ रहा था"

$ 15.00
£ 13.50
₹ 999

Warrior's VICTORY
PUBLISHING HOUSE
www.warriorsvictory.co.uk